राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक – पद्मश्री जिनविजय मुनि, पुरातत्त्वाचार्य



ग्रन्थाङ्क ७०

अज्ञातकर्तृक

इन्द्रप्रस्थप्रबन्ध



राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर (राज.)

इन्द्रप्रस्थप्रबन्ध

राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला
ग्रन्थांक 70

अज्ञातकर्तृक

इन्द्रप्रस्थप्रबन्ध

सम्पादक
दशरथ शर्मा

प्रकाशक
राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

प्रकाशक :
निदेशालय
राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान
पी.डब्ल्यू.डी. रोड, जोधपुर
फोन : 0291-2430244
फैक्स : 0291-2637646

प्रथमावृत्ति : 1963 (वि.सं. 2020)
द्वितीयावृत्ति : 2011 (वि.सं. 2067)

मूल्य : पैतीस रुपये मात्र (₹ 35.00)

राज. प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान के लिए
अरिहन्त प्रकाशन द्वारा मुद्रित

INDRAPRASTHPRABANDHA

By **Dashrath Sharma**

Published by : **Rajathan Oriental Research Institution,** Jodhpur
Second Edition : 2011 **Price ₹ : 35.00**

निदेशकीय

अज्ञात कर्तृक इन्द्रपस्थ प्रबन्ध का सम्पादन डॉ. दशरथ शर्मा द्वारा राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला के 70वें पुष्प के रूप में किया गया था। संभवत: 18वीं सदी में रचित इस रचना में दिल्ली के प्राचीन इतिहास का समावेश हैं अत: साहित्य के साथ-साथ इतिहास विद् विद्वानों ने भी इस पुस्तक को महत्ता दी है। इसी महत्त्व को दृष्टिगत रखते हुए इसके पुनर्मुद्रण का निर्णय लिया गया है। संस्कृत साहित्य एवं इतिहास जगत के शोधार्थियों की शोध पिपासा शान्त करने में यह ग्रन्थ सहायक सिद्ध होगा इस आकांक्षा के साथ यह ग्रन्थ सुधी जिज्ञासुओं को समर्पित है।

निदेशक
श्यामसिंह राजपुरोहित
RAS
राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान,
जोधपुर

मार्च, 2011 ई.

विषय - सूची

प्रधान संपादकीय किंचिद् वक्तव्य

हमारे परममित्र, इतिहासविद् बहुश्रुत विद्वान् डॉ· दशरथ शर्मा राजस्थान के प्राचीन इतिहास के बड़े लब्धप्रतिष्ठ, मर्मज्ञ एवं संशोधक पंडित हैं। आपने चाहमानों के इतिहास विषयक 'अर्लि चौहान डीनेस्टीज' (EARLY CHAUHAN DYNASTIES)* नामक बड़े महत्त्व की पुस्तक लिख कर, राजस्थान के प्राचीन इतिहास पर बहुतसी अभिनव और अमूल्य सामग्री उपस्थित की है। संस्कृत साहित्य के आप बहुत ही मर्मज्ञ अध्यापक एवं अध्येता होने के अतिरिक्त प्राकृत, अपभ्रंश और प्राचीन राजस्थानी साहित्य के भी उतने ही प्रौढ पंडित एवं गवेषक विद्वान् हैं।

राजस्थान में निर्मित संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश एवं पुरातन राजस्थानी ग्रन्थों में से आपने अनेक नूतन ऐतिह्य तथ्य खोज खोज कर इतः पूर्व अनेकानेक लेख और निबन्ध प्रकट कराकर, राजस्थान एवं उससे संबद्ध सीमा-प्रदेशों के ऐतिहासिक तथ्यों और प्रसंगों पर नवीन प्रकाश डाला है।

प्रस्तुत 'इन्द्रप्रस्थ प्रबन्ध' जो 'राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला' के एक पुष्प के रूप में प्रकट किया जा रहा है, आप की ऐसी ही शोधमय प्रवृत्ति का परिणाम है। प्रबन्धगत वस्तु का योग्य परिचय आपने अपने प्रास्ताविक में आलेखित कर ही दिया है।

प्रस्तुत प्रबन्ध का अध्ययन करने पर हमारे पास के संग्रह में भी, इस विषय पर प्रकाश डालने वाली कितनीक सामग्री पड़ी हुई है, जिसका हमें स्मरण हो आया। उसमें की कुछ सामग्री चुन कर हम इसकी अनुपूर्ति के रूप में दे रहे हैं, जिससे पाठकों को प्रस्तुत प्रबन्ध के अध्ययन और विवेचन की दृष्टि से और भी अधिक कुछ जानकारी मिल सकेगी।

हमारे खयाल से प्रस्तुत प्रबन्ध की रचना करने वाला जयपुर या आमेर का निवासी कोई दिगंबर जैनसंप्रदायानुयायी पंडित है। वहां पर जो भट्टारक लोक रहते थे उनके

* S. CHAND & CO. DELHI—JULLUNDHR—LUCKNOW.

शास्त्रसंग्रहों में स्थानीय और प्रादेशिक ऐतिहासिक घटनाओं और प्रसंगों के वर्णन की बहुतसी फुटकल बातें गुटकों आदि में लिखी मिलती हैं। इसी तरह श्वेतांबर-संप्रदाय के यतिजनों के शास्त्रसंग्रहों में भी ऐसी सामग्री यत्र-तत्र उपलब्ध होती है। खोज करने पर इस प्रकार की सामग्री का बहुत बड़ा संग्रह प्राप्त किया जा सकता है और उसके आधार पर हमारे प्राचीन इतिहास के अनेकानेक नूतन तथ्यों पर विशिष्ट प्रकाश डाला जा सकता है।

इतिहासप्रेमी और खोजी विद्वानों से हमारी नम्र विज्ञप्ति है कि वे यदि इस प्रकार की सामग्री का संकलन करने का सुयोग्य प्रयत्न करेंगे तो उसे 'राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला' द्वारा समुचित रूप में, प्रकाशित करने का प्रयत्न किया जायगा।

अनेकान्तविहार,
अहमदावाद.
ता. १८, मार्च, १९६०

— मुनि जिनविजय

प्रस्तावना ।

प्रस्तुत 'इन्द्रप्रस्थ' नामक प्रबन्ध का सम्पादन दो हस्तलिखित प्रतियों के आधार पर किया गया है, जिनमें से एक दिगम्बर शास्त्रभण्डार, जयपुर की और दूसरी दिल्ली के अनेकान्त - सम्पादक श्रीपरमानन्दजी शास्त्री के संग्रह की है। हमने इस में पहली को 'क' और दूसरी को 'ख' संज्ञा से निर्दिष्ट किया है।

'क' का कुछ आरम्भिक अंश त्रुटित है। इसका आरम्भ पहले सर्ग के २१ वें श्लोक से हुआ है। इसके अन्त में भी कुछ ऐसे श्लोकों का अभाव है जो 'ख' में प्राप्त हैं। किन्तु प्रति का यह अंश सम्भवतः अपूर्ण नहीं है। 'क' और 'ख' प्रतियों की नकल किसी एक ही प्रति से की गई होगी। दोनों की अशुद्धियां एक हैं, दोनों में त्रुटित अंश भी एक है। किन्तु 'ख' प्रति के लेखक ने अन्त में कुछ अंश बढ़ा दिया है, जिस में कुछ का इन्द्रप्रस्थ-प्रबन्ध से प्रायः सम्बन्ध ही नहीं है। 'ख' प्रति के लेखक या स्वामी के पास 'क' प्रति भी किसी न किसी समय रही होगी। उसने अन्तिम सर्ग के श्लोकों की मूल संख्याएं बदल कर ऊपर की तर्फ 'क' प्रति के कुछ श्लोक जोड़ दिये हैं। यद्यपि यह इन्द्रप्रस्थप्रबन्ध दिल्ली के प्राचीन इतिहास का कुछ वर्णन प्रस्तुत करने की दृष्टि से रचा गया है पर इस को विशुद्ध इतिहास की पुस्तक मानना भूल होगी। वास्तव में उस का अधिक उपयोग उन ऐतिहासिक मान्यताओं के ज्ञान के लिये है, जो उस समय किंवदन्ती के रूप में प्रस्तुत हो चुकी थीं, चाहे वे सर्वथा कल्पित ही हों या अर्द्ध सत्य।

प्रबन्ध का रचनाकाल अठारवीं ईस्वी शताब्दी के आसपास रहा होगा। 'क' में अन्तिम बादशाह का नाम 'जहानदार' और 'ख' में 'फर्रुखसियर' है। इस अन्तिम काल की अराजकता और गड़बड़ का दोनों प्रतियों में स्पष्ट निर्देश है। मुगलों की शक्ति का क्षय हो चुका था। किसी दूसरी शक्ति ने उस का स्थान न लिया था। चतुर्थ सर्ग में 'किल्ली - ढिल्ली' का प्रसिद्ध कथानक देते हुए कुछ भविष्यवाणियां अवश्य दी गई हैं। उन के कथनानुसार मुसलमानों के बाद राइवंशज, उसके बाद सिसोदिये और फिर मुसलमान दिल्ली पर राज्य करेंगे। इस कथन की तुलना 'पृथ्वीराजरासो' की भविष्यवाणी से की जा सकती है।

यह निश्चित है कि इन्द्रप्रस्थप्रबन्ध की रचना से पूर्व पृथ्वीराजरासो अपना वर्त्तमान रूप ग्रहण कर चुका था। लोग उसे प्रामाणिक ग्रन्थ भी मानने लगे थे। चतुर्थ सर्ग में 'ढिल्ली - किल्ली" की कथा और कुछ हिन्दी पद्य रासो से उद्धृत हैं। लोग उस समय

विक्रमादित्य को परमार भी मानने लगे थे। उसकी जीवनी का आधार 'सिंहासन-बतीसी' और 'बेताल-पचीसी' जैसी कथाएं बन चुकी थीं (देखें चतुर्थ सर्ग, श्लोक १०)।

पहले सर्ग में दिल्ली के ग्यारह नाम दिये हैं, शक्रपंथा, इन्द्रप्रस्था, शुभकृत्, योगिनीपुर, दिल्ली, ढिल्ली, महापुरी, जिहानाबाद, सुषेणा, महिमायुक्ता, शुभाशुभकरा। इन में जिहानाबाद शाहजहानाबाद का भ्रष्ट रूप है। इसी सर्ग में पृथ्वी की रचना, जम्बूद्वीप, भरतक्षेत्र, चार युग और अन्तिम युग में छ संवत्-प्रवर्तकों के नाम हैं।

दूसरे सर्ग में प्रथम संवत्सर-प्रवर्तक युधिष्ठिर का वंश वर्णित है। जनमेजय के बाद के नाम कल्पित हैं। दीपदयाल, भोपत, सुखमल्ल, भीखमराज, डूंगरसी, सुजाणसिंघ आदि शब्द इस कल्पना के दारिद्र्य के द्योतक हैं। अन्तिम राजा का नाम नीलाधिपति है। हमने प्रबन्ध में सब राजाओं के नाम भिन्न टाइप में कर दिये हैं, जिससे पाठक सुगमता से इनके विषय में जान सकें।

तीसरे सर्ग में रामवंश का वर्णन है। इस का पहला राजा शंखध्वज नीलाधिप को युद्ध में मार कर गद्दी पर बैठा। यह परमार राजा के हाथों मारा गया।

चतुर्थ सर्ग में संवत्सर-प्रवर्तक परमारवंशी विक्रमादित्य के वंश का वर्णन है। नाम कल्पित हैं। पाठकों की सुविधा के लिये ये अलग टाइप में कर दिये गये हैं।

पांचवें सर्ग में तंवर-वंश का वर्णन है। इस का पहला राजा अनंगपाल था। इसी के सम्बन्ध में चतुर्थ सर्ग के अन्त में ढिल्ली–किल्ली की कथा वर्णित है। प्रबन्ध की तंवर–वंशावली यह है—

१ अनङ्गपाल	८ नरपाल	१५ कंवरपाल
२ बिल्हणदे	९ वत्सराज	१६ अनंगपाल
३ पृथकु	१० वीरपाल	१७ तेजपाल
४ गंगेव	११ गोपाल	१८ मोहपाल
५ सहदेव	१२ तोल्हण	१९ स्कंदपाल
६ श्रीयुतयुत	१३ जुलखरी	२० पृथीराज
७ कुंदयुत (?)	१४ तसखरी	

किन्तु वंशावली में तंवरों की गणना उन्नीस ही अंकों में दी है, जिस से प्रतीत होता है कि या तो प्रथम अनंगपाल को गणना में छोड़ दिया गया है या वह कल्पित है। दूसरे

अनंगपाल की सत्ता इतिहास-सिद्ध है। पार्श्वनाथचरित (रचना संवत् ११८९) के रचयिता कवि श्रीधर ने उसके राज्य, राजधानी और ऐश्वर्य का अच्छा वर्णन किया है। इसकी नीति आदि के मूल्याङ्कन के लिये पाठक राजस्थानभारती, भाग ३, अङ्क ३—४ में दिल्ली का तंवर राज्य नाम का लेख पढ़ें। इस लेख के परिशिष्ट रूप में एक जहांगीर के समय की और दूसरी संवत् १८४५ की तंवरों की वंशावलियां दी गई हैं। पहली वंशावली और प्रबन्ध की वंशावली में केवल अनंगपाल प्रथम और द्वितीय के नाम एक से हैं। बाकी सब नाम भिन्न हैं। किन्तु संवत् १८४५ की वंशावली से इसमें पर्याप्त नाम मिलते हैं। यह सादृश्य समय की आपेक्षिक सन्निकटता के कारण संभव है। उसमें बीस नाम हैं। प्रबन्ध का चौथा राजा वंशावली का दूसरा राजा गंगेव है। वंशावली का तीसरा राजा पृथ्वीराज संभवतः प्रबन्ध का तीसरा राजा पृथकु है। सहदेव वंशावली का चतुर्थ और प्रबन्ध का पांचवां राजा है। नरपाल का नाम वंशावली का पांचवां है, किन्तु प्रबन्ध में श्रीयुतयुत और कुंदयुत को बीच में डाल कर नरपाल को आठवें स्थान पर पहुंचा दिया गया है। अन्य मिलते-जुलते नाम ये हैं—

वछराज	प्रबन्ध ९	वंशावली ८
गोपाल	,, ११	,, १२
अनंगपाल	,, १६	,, १६
तेजपाल	,, १७	,, १७
पृथ्वीराज	,, २०	,, २०

प्रबन्ध के जुलखरी और तसखरी आदि कुछ नाम विचित्र हैं। उन्हें कल्पित ही मानना होगा। इतिहास के अन्धकार में लोगों को केवल यह याद रहा कि तंवरों के १९-२० राजा थे। इनमें अनंगपाल की निश्चित सत्ता हर एक को मालूम थी। कुछ अन्य नाम भी सम्भवतः उन्हें याद थे। बाकी की पूर्ति भाट-बुद्धि से उन्होंने की। इसी कारण से इन प्रबन्धों और वंशावलियों के आधार पर सत्य की गवेषणा अत्यन्त कठिन पड़ती है।

प्रबन्ध और वंशावलियों में इतिहाससिद्ध मदनपाल के नाम का कम से कम मदनपाल-रूप में अभाव है। यद्यपि खरतरगच्छबृहद्गुर्वावलि के आधार पर यह निश्चित है कि संवत् १२२३ में यह दिल्ली के सिंहासन पर वर्तमान था। प्रबन्ध के कथन से ही नहीं, अन्य प्रमाणों से भी सिद्ध है कि बीसलदेव ने दिल्ली-राज्य को हस्तगत किया था। मदनपाल और विग्रहराज की सम-सामयिकता को देखते हुए हम इस से पूर्व भी संभावना कर चुके हैं कि विग्रहराज ने मदनपाल को पराजित कर अपने अधीन किया होगा। संवत् १२८२ में

नरेन्द्रप्रभसूरि द्वारा रचित 'अलङ्कारमहोदधि' में उद्धृत निम्नलिखित श्लोक से यह धारणा कुछ और पुष्ट हो चली है—

तस्मिन्नुदर्गरिपुवर्गजये निसर्गवैयग्रवानजनि विग्रहराजदेवः।
यद्विग्रहं जगदसम्भवितं विभाव्य वैरिव्रजोऽपि मदनोऽपि मदं मुमोच ॥

इसकी अन्तिम दो पङ्क्तियां श्लेषयुक्त हैं। विग्रहराज, वीसलदेव का दूसरा नाम है। तीसरी पंक्ति में विग्रह का अर्थ 'शरीर' और 'युद्ध' दोनों हो सकते हैं। मदन का अर्थ कामदेव स्पष्ट है। किन्तु यह भी सम्भव है कि कवि का इंगित मदन या मदनपाल की तर्फ हो, जिसने विग्रहराज के जगदसम्भव युद्ध को देख कर मद का त्याग कर दिया। शायद यही मदनपाल प्रबन्ध का मोहपाल और वंशावली का मोहणपाल हो।

प्रबन्ध ने और १८४५ की वंशावली ने पृथ्वीराज को अन्तिम तंवर-राजा माना है। ठक्कर फेरु ने पृथ्वीपाल तंवर की मुद्राओं का उल्लेख किया है। इसलिए इसका भी तंवर राजा होना असम्भव नहीं है। शायद इसीको, पृथ्वीराज चौहाण के समय के आसपास दिल्ली का राजा होने के कारण, भोले भाले लोग कुछ समय के बाद यह मानने लगे हों कि तंवरों ने दिल्ली का राज्य अपने दौहित्र पृथ्वीराज चौहाण को दे दिया था। प्रबन्ध में रासो की इस प्रसिद्ध वार्ता का उल्लेख नहीं है कि अनंगपाल पृथ्वीराज को दिल्ली का राज्य देकर तपस्या के लिये चला गया था। प्रबन्ध ने पृथ्वीराज तंवर को ही बीसलदेव चौहान द्वारा पराजित दिल्ली का अन्तिम राजा माना है। विषय अभी और गवेषणीय है।

छठे सर्ग में चौहान-वंशका वर्णन है। राजाओं के नाम बीसलदेव, गंगेव, पहाड़ी, स्यामसु, विहाड़ी, गंगेव और पृथ्वीराज दिये हैं जो प्रायः ठीक हैं। पहाड़ी पृथ्वीभट द्वितीय का नाम प्रतीत होता है। स्यामसु से सोमेश्वर का नाम ग्रहण किया जा सकता है। विहाड़ी या वाग्भट कोई शायद सोमेश्वर का प्रतिद्वंद्वी हो। गंगेव गलती से छठे स्थान पर आगया है। पृथ्वीराज के पतन के कारण, कुछ तोड़ मरोड़ के साथ, वही है जो हमें अन्य ग्रन्थों में मिलते हैं।

सातवें सर्ग में पठान-वंश का वर्णन है। कई नाम अशुद्ध और गलत क्रम से हैं। प्रबन्ध के रचयिता को पठानवंश का बहुत सामान्य ज्ञान था।

आठवें सर्ग में लोदियों का वर्णन है। इसमें वैरमखान और तैमूर का लाना स्पष्टतः अशुद्ध है। प्रबन्ध ने वैरमखां को लोदीवंश का अन्तिम राजा और तैमूर को भारत में चकत्ता (मुगल) वंश का संस्थापक माना है।

नवें सर्ग में तैमूर, बाबर और हुमायूं का वर्णन है। हुमायूं शेख से हार कर बल्ख चला गया।

दशवें सर्ग में शेखों का राजवंश है। इस का पहला राजा अलीसाहि शेरशाह के स्थान पर रख दिया गया है और शेरशाह को चौथा राजा बनाया गया है। वास्तव में इस वंश का नाम 'शेख' नहीं, 'सूर' था। इसके प्रथम बादशाह शेरशाह ने सन् १५४० से १५४५ तक राज्य किया। उस के बाद इस्लामशाह १५४५ से १५५२ तक गद्दी पर रहा। यही प्रबन्ध का सलीमशाह है। वास्तविक मुहम्मद आदिल को शायद 'अलीमहमद' में परिवर्तित कर वंश का अन्तिम राजा माना गया है।

ग्यारहवें सर्ग में मुगल (चकत्ता) वंश का वर्णन है। दूसर जाति के हेम या हेमू के इन्द्रप्रस्थ में राज्य का निर्देश ठीक है, चाहे वह इतने दिन तक वहां का स्वामी न रहा हो। अकबर का सिंहासनारोहण संवत् १६१३ ठीक है। उसका वि. सं० १६२४ (सन् १५६७) में चित्तौड़ जाना भी ठीक है। इसी वर्ष में चित्तौड़ पर घेरा डाल कर उसने सन् १५६८ के आरम्भ में चित्तौड़ को हस्तगत किया था। अकबर के राज्य के सुखशान्तिमय वातावरण का प्रबन्ध में संक्षेप में सुन्दर चित्रण है। गोपाचल (ग्वालियर) और चित्रकूट का श्लोक ९ में फिर निर्देश है। ग्वालियर के विषय में इसके बाद प्रबन्ध में कुछ नहीं है। किन्तु 'अकबर-नामे' से हमें ज्ञात है कि सन् १५६७ से पूर्व उस ने ग्वालियर पर अधिकार कर लिया था। संवत् १६३६ में चित्तौड़ की विजय का संवत् अशुद्ध है। उस से लगभग एक वर्ष पूर्व अकबर ने कुम्भलमेर अवश्य जीता था। शायद प्रबन्धकार को उस का कुछ ज्ञान हो।

जहांगीर और शाहजहां के राज्यकाल का प्रबन्ध में ठीक ठीक निर्देश है। औरंगजेब का मृत्युकाल भी ठीक है।

औरंगजेब के बाद की अराजकता का प्रबन्ध में अच्छा चित्रण है, किन्तु घटनाएं किसी अंश में कल्पित हैं। बहादुरशाह का राज्यकाल ठीक है। जहांदारशाह ने ग्यारह महीने तक राज्य किया। प्रबन्धकार ने उसका राज्यकाल १ वर्ष १ महीना ३ दिन दिया है।

'ख' प्रति में कुछ अन्य घटनाओं का वर्णन है। १७०७ के बाद भारत में अनेक युद्ध हुए। प्रबन्ध में केवल युद्धों के नाम दिये हैं। किस किस का युद्ध हुआ - बात का निर्देश नहीं है। श्लोक ३६, ४६, ४८ और ४९ में कछवाहों का और श्लोक ३७ एवं ४० वें में अम्बावती यानि आमेर का नाम आया है। मेवाड़ का भी इतस्ततः इन श्लोकों में नाम है। श्लोक ५१ में लिखा है कि मेवाड़पति दिल्लीपति होगा। चौहानों के बारे में भी उल्टी सीधी

कई बातें हैं। इन श्लोकों की वृद्धि न जाने किस की कृपा है। प्रति 'क' में इनका अभाव है। श्लोक ६१ में फर्रुखसियर का नाम दिया है।

'इन्द्रप्रस्थप्रबन्ध' के विषय का यह सामान्यतः निर्देश है। सम्पादित ग्रन्थ में संस्कृत की दृष्टि से अनेक अशुद्धियां हैं। इन में कुछ लिपिकारों की कृपा से हैं। किन्तु प्रबन्ध के रचयिता ने स्वयं शुद्ध संस्कृत लिखने का प्रयत्न नहीं किया है। इस खिचड़ी संस्कृत की तुलना चारण एवं भाटों की ख्यातों और बातों आदि की संस्कृत से की जा सकती है। रचयिता का लक्ष्य मुख्यतः घटनाक्रम का निर्देश रहा है, भाषा चाहे शुद्ध हो या अशुद्ध।

अद्यावधि अप्रकाशित इस इन्द्रप्रस्थप्रबन्ध को पाठकों के सम्मुख तद्वत् रख रहे हैं। सुविज्ञ जन प्रबन्ध का समुचित प्रयोग करें। इतिहास के अन्धकार युग में यथाशक्ति यथाज्ञान इतिहास को प्रस्तुत करने का जो प्रयत्न इन प्रबन्धकारों ने किया है वह उपेक्षा की वस्तु नहीं है। उनसे हमें इतस्ततः अनेक तथ्यरत्न मिलते हैं। हमारा प्रयत्न इतने तक ही सीमित रहा है कि नीर-क्षीर विवेकी पाठकों के सम्मुख एक ऐसे प्रबन्ध को उपस्थित करें।

ज्येष्ठ शु० पूर्णिमा,
वि० सं० २०१५
वीर० नि० सं० २४८५।

—दशरथ शर्मा

इन्द्रप्रस्थप्रबन्धः ।

॥ ॐ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीसरस्वत्यै नमः ॥

॥ प्रथमः सर्गः ॥

श्रीगणपतिं[1] गुरून् नत्वा[2] ब्रह्मविष्णुसरस्वतीः[3] ।
ध्यात्वा नृपवर्णनं च[4] दिल्लीपुर्याः[5] करिष्यति(ते) ॥ १ ॥

इहैव जंबूसद्द्वीपे विख्यातं[6] भुवनत्रयम् ।
मेरुसंशोभितं मध्यं कल्पवृक्षसमन्वितम्[7] ॥ २ ॥

तत्र श्रीदेवनिर्मायि[8] लक्षयोजनमानकृत् ।
तन्मध्ये देवताः[9] कृत्वा ग्रामसंख्या महीतले ॥ ३ ॥

चतुर्दश[10] महाकोटिः लक्षश्चैव चतुर्दश[11] ।
अष्टाविंशत्सहस्राणि शतानां पञ्चकः[12]स्मृतः ॥ ४ ॥

एकसप्तिमिता संख्या (१४१४२८५७१) त्रिग्राम उपरि स्थितः ।
जंबूद्वीपे सदा काले देवस्थितिकृतामपि ॥ ५ ॥

मध्ये मेरुः[13] सदाभाति ग्राम अर्द्धकृतं मुदा[14] ।
तस्य क्षेत्रस्य मध्ये तु भरतक्षेत्र[15] राजते ॥ ६ ॥

आर्यदेशा द्विचत्वारि(४२) वर्तंते[16] महीमंडले ।
तन्मध्ये शुभक्षेत्रं देशः[17] पांचालसंज्ञकः ॥ ७ ॥

शक्रपंथा पुरी भाति इंद्रराज्यकृता[18] तदा ।
देवतावसतिस्तत्र धर्मनीतिस्तदा बहुः ॥ ८ ॥

लाभाधिकः स्वसंतोषः स्वधर्मनिपुणा जनाः ।
कुटुम्बमित्रतो तोषः वचनसत्यता मुदा ॥ ९ ॥

दर्शनं वासुदेवस्य बलदेवजिनेश्वरः ।
महापुरुषसिद्धानां दर्शनं तत्र विद्यते ॥ १० ॥

---

१. °ति । २. °रुनत्वा । ३. °सरस्वती । ४. नृपवंशवर्णनं च । ५. °पूर्या । ६ °विख्यात । ७. °न्वितः । ८. मूल पाठ यही है । ९. देवता । १०. चतुर्दस । ११. चतुर्दसः । १२. पंचक । १३. मेरु । १४. पाठ यही है । १५. शुद्ध करनेसे छंदो भङ्ग होता है । १६. वर्तते । १७. देश । १८. कृतं ।

दानाधिक्यं[1] सुखाधिक्यं[2] मुक्तिश्च स्वर्गदायकः ।
ईतिभीतिभयं नास्ति सुभिक्षं वर्तते मही ॥ ११ ॥

यज्ञाधिक्यं[3]तरं तत्र वर्तते महीं[4]मण्डले ।
विघ्नकर्ता च कीनाशः भयं यज्ञस्य कारकः ॥ १२ ॥

सुखं नानाविधं तत्र दुःखं स्वप्ने न दृश्यते ।
ईदृशी च पुरी भाति इंद्रराजकृता[5] तदा ॥ १३ ॥

॥ दिल्लीनामानि[6] ॥

शक्रपंथा इंद्रप्रस्था शुभकृत् योगिनीपुरः ।
दिल्ली ढिल्ली महापुर्या जिहानाबाद इष्यते ॥ १४ ॥
सुषेणा महिमायुक्ता शुभाशुभकरा[7] इति ।
एकादशमितनामा दिल्लीपुरी[8] च वर्तते ॥ १५ ॥
युगानां संख्यया तत्र लक्षसप्तदशं मुदा ।
अष्टाविंशत(ति)सहस्राणि (१७२८०००) कृतं सत्ययुगं मुदा ॥१६॥
मत्स्यं[10]-कच्छे[11]-वराहाख्यैः[12] नृसिंहो वामनाभिधः ।
[13]वर्तते ऽयतारस्तत्र पंचसंख्या महीतले ॥ १७ ॥
द्वितीययुगसंख्या चैं[14] लक्षद्वादशसंज्ञकं ।
सैं[15]हस्रषणनवस्तत्र (१२९६०००) त्रेतायुगमिहोच्यते ॥ १८ ॥
पैं[16]रशुरामश्च रामश्च त्रेतायां वर्तते द्वयम् ।
महापुरुषराजेन्द्रः दानी मानी महाबैं[17]ली ॥ १९ ॥
तृतीययुगसंख्यां[18] च अष्टलक्षमितं शुभं ।
चतुःषष्टिसहस्राणि (८६४०००) द्वापरं युगमुच्यते ॥ २० ॥
तत्र कृष्णसहदेवः अैं[19]वतारो जायते भुवि ।
चतुर्थयुगसंख्या च लक्षचत्वारि संज्ञ(ख्य)कः ॥ २१ ॥
द्वात्रिंशत्सहस्राणि (४३२०००) कलिनाममहायुगः ।
बुद्ध-कल्की द्वयं तत्रावतारो जायते मही ॥ २१(अ) ॥

---

१. °क्य । २. °क्य । ३. °धिकत° । ४. °महि । ५. कृतः । ६. नाम ।
७. °करामिति । ८. °पुर च । ९. सत । १०. मछ । ११. कछ । १२ ख्य ।
१३. वतारो वर्तते । १४. संख्याश्च । १५. सहश्र । १६. परसं । १७. शुद्ध नहीं किया जा सकता । १८. संख्याश्च । १९. वतारा ।

कलिमध्ये शाककर्त्ताः[1] षट्संख्या नृपसत्तमाः[2] ।
आदौ चन्द्रेन्द्रप्रस्थश्च[3] महाराजो[4] युधिष्ठिरः ॥ २२ ॥
उज्जैनी-विक्रमादित्यो[5] द्वितीयो[6] नृपसत्तमः ।
प्रतिष्ठानपत्तने च शालिवाहन[8]शाककृत् ॥ २३ ॥
सिंधु-संग-वैतरु(र)ण्यां विजयो नन्दनो नृपः ।
कनकगिरिपत्तने च नृपः नागार्जुनाभिधः ॥ २४ ॥
.... कल्की राज्ञः(जा) भविष्यति ।
षट्नृपाः शाककर्त्ताश्च युगे कलिमहच्छुभे ॥ २५ ॥
पंचपचाशल(ल्ल)क्षा च सहस्रपंचविंशतिः ।
शतानि पंचकस्तत्र उपरि पंचविंशतिः ॥ २६ ॥
एकेन समये तत्र संग्रामे म्रियते जनः ।
तदा शाकं विजानीयात् कथितं पूर्वसूरिभिः ॥ २७ ॥
आदौ युधिष्ठिरशाकः अब्धि-अब्धि-ख-वह्नूनयः(३०४४) ।
तत्पश्चाद् विक्रमो भूपः शाकपंच-त्रि-भूमि च (१३५) ॥ २८ ॥
श्रीशालिवाहननृपः अष्टादशसहस्र(१८०००)सुं[9](युक्) ।
शाक एव विराजं(ज)ते शालिवाहनजं(जः) कलेः(लौ)[10] ॥ २९ ॥
विजयो नंदनो नाम शाकः दशसहस्र(१००००)वत् ।
नृपनागार्जुनशाकः लक्षचत्वारि (४०००००) संज्ञ(ख्य)कः ॥३०॥
कल्की शाकैक-द्वि-अष्ट(८२१) वर्षाणि कथयंति च ।
कलिमध्ये भवेत् शाकः षट्संख्या पंडितोत्तम ! ॥ ३१ ॥
अथाग्रे श्रृणु राजेन्द्र ! वंशवर्णनमुत्तमम् ।
कलिकाले महारम्भे शाकपंथे नृपः शुभः ॥ ३२ ॥
श्रीकृष्णवासुदेवाग्रे वंशवर्णन कथ्यते ।
कवे(वि)धर्मध्वजो नाम इन्द्रप्रस्थेप्रबंधके ॥ ३३ ॥

॥ इति इन्द्रप्रस्थप्रबंध प्रथम सर्गः[12] ॥

---

१. कर्ताको अकारान्त मानकर । २. °सत्तमः । ३. °प्रस्थश्च । ४. महाराजा । ५. °त्यं । ६. द्वितीय । ७. विसर्गसे छन्दोभंग होता है । ८. सहश्र । ९. स्तु । १०. कले । ११. वृस्थ । १२. ख का पाठ - इति श्रीइंद्रप्रस्थप्रबन्धे ग्रन्थस्थापनः शकनामस्थापनवर्णनो नाम प्रथमसर्गः ॥ श्लोक ३६ ॥

॥ द्वितीयः सर्गः ॥

॥ अथ वंशवर्णनम् । अथ पाण्डवाः ॥

तत्रादौ शक्रपंथायां इन्द्रो राज्यं करिष्यति ।
कलिकाले इन्द्रप्रस्थ इति नाम भविष्यति ॥ १ ॥
पुनः पांडवभूपालाः राज्यं कृत्वा कलौ युगे ।
वर्षत्रयसहस्रश्च भवतीह न संशयः ॥ २ ॥
धर्मिष्ठः स्वजनः प्रीतिः स्वधर्मे मन[१][सु]तिष्ठति ।
शीलवंत सुखोत्साही पांडवानां च राजते ॥ ३ ॥
आदौ युधिष्ठिरनृपः कृत्वा राज्यं च भूतले ।
त्रयत्रिंशात्स्ववर्षे च शक्रपंथे नृपोऽभवत् ॥ ४ ॥
पश्चात् परीक्षितो[२] राज्ञः(जा) त्रयत्रिंशतवत्सरः ।
मासैक-त्रिदिनैश्चैव(३३।१।३) नृपश्रीधर्मनायकः ॥ ५ ॥
राजा जन्मेजयस्तत्र चतुरशीतिवत्सरः ।
मासपंच-दिनसप्तविंशतिस्तत्र(८४।५।२७) राज्यकृत् ॥ ६ ॥
राजा सोमधरस्तत्र द्वयशीति(८२)वत्सरः शुभः ।
मासाष्ट-दिनत्रिविंश(८२।८।२३) चतुर्थो वंशनायकः ॥ ७ ॥
राजा उत्तमचन्दश्च अष्टाशीतिश्च वत्सरः ।
द्विमास-दिनअष्टश्च(८८।२।८) पंचमो नृपतिर्भवेत् ॥ ८ ॥
राजा यदुरथश्चैव वत्सरपंचसप्तति: ।
मासत्रयं दिनाष्टौ च (७५।३।८) शक्रपंथे नृपोत्तमः ॥ ९ ॥
ततो दीपदयालाख्यः वत्सरपंचसप्ततिः (७५) ।
दिग्मास-दिनअष्टौ च(७५।१०।८) सप्तमो राज्यनायकः ॥१०॥
राजा श्रीउग्रसेनाख्यः अष्टसप्ततिवत्सरः ।
माससप्त-दिनै रुद्र(७८।७।११) संख्या चाष्टमगो नृपः ॥ ११ ॥
मंजुलपायनामाख्यः एकाशीतिश्च वत्सरः ।
ईशमास-त्रिविंशाहा (८१।११।२३) नवमो राज्यनायकः ॥१२॥
सूरसेननृपस्तत्र वर्षश्च नवसप्ततिः (७९) ।
मासाष्ट-षट्दिनश्चैव (७९।८।६) राज्यकृद् दशमो नृपः ॥ १३ ॥

---

१. मनस्का विचित्र प्रयोग । २. ख का पाठ परीछतो ।

श्रीभोपतिनृपः श्रीमान् वर्षाष्टसप्ततिस्तथा ।
मास-पंचद्वयदिन(७८।५।२)राज्यकृत् नृपसत्तमः ॥ १४ ॥
राजा श्रीनरजंघाख्यश्चतुषष्टिश्च वत्सरं(रः) ।
दिनत्रयं मासप्त(६४।७।३)राज्यकृत् द्वादशो नृपः ॥ १५ ॥
सुखमल्लमहाराजः द्विषष्टिवत्सरस्तथा ।
पंचविंशदिनश्चैव (६२।०।२७) राज्यं कृत्वा च भूतले ॥ १६ ॥
नृपः श्रीरणजीताख्यः पंचषष्टिश्च वत्सरः ।
मासदिग्-दिननंदद्वि (६५।१०।२९) चतुर्दशनृपः शुभः ॥१७॥
नरहरदेवश्च नृपः एकषष्टिश्च वत्सरः ।
दिग्मास-दिनवेदश्च(६१।१०।४) नृपः पंचदशोऽभवत् ॥ १८ ॥
श्रीसुचित्ररथो नाम त्रयसप्ततिवत्सरः ।
मासैकादश-वेदाह्ना (७३।११।४) नृपश्चन्द्रकलोऽभवत् ॥ १९ ॥
सूरनामनृपस्तत्र वर्षाष्टसप्ततिस्तथा ।
दिनद्वयं राज्यं कृत्वा (६८।०।२) स्वर्गं गन्ता च भूमिपः ॥ २० ॥
श्रीसोस(? भ)ननृपस्तत्र पंचाशतपंचवत्सरः ।
अष्टमास-द्विनंदाह्ना (५५।८।२९) अष्टादशनृपः स्मृतः ॥ २१ ॥
नृपपर्वतनामाख्यः पंचाशत्वत्सराणि च ।
एकविंशदिनश्चैव मासाष्टं (५०।८।२१) स च राज्यकृत् ॥२२॥
द्विपंचाशत्वत्सराणि सप्ताह्ना नवमासकः (५२।९।७) ।
नृपश्रीमधुवंतश्च राज्यकृत् विंशमो नृपः ॥ २३ ॥
नृपटोडरमल्लाख्यः चत्वारिंशाष्टवत्सरः ।
पंचमास-धृतिदिना (४८।५।१८) एकविंशत्तमो नृपः ॥ २४ ॥
भीखमराजाख्यनृपः नवत्रिंशत्(च) वत्सरः ।
विंशाह्ना सप्तमासश्च(३९।७।२०)द्वाविंशो नृपराज्यकृत् ॥२५॥
नरहरराजाख्यनृपः पंचचत्वारि वत्सरः ।
मास एकादशस्तत्र (४५।११।०) राज्यं कर्ता महीतले ॥ २६ ॥
राजा दशवलो नाम चतुःचत्वारि वत्सरः ।
मासाष्ट-दिनसप्तश्च (४४।८।७)राज्यं जिनमितो नृपः ॥ २७ ॥

सांगो नृप इन्द्रप्रस्थे षट्पंचाशत्वत्सरः (५६।०।०)।
राज्यं कृत्वा महीं भुक्त्वा नृपस्तत्त्वमितोऽभवत् ॥ २८ ॥
हैटीराजा महीपृष्ठे चतुपंचाशवत्सरः।
द्विदिनो दशमासश्च (५४।१०।२) राज्यं षड्विंशमो नृपः ॥ २९॥
अहैटनरपंचाशवर्षमासैकषट्दिनः (५०।१।६)।
राज्यं कर्ता महीं भोक्ता स सप्तविंशमो नृपः ॥ ३० ॥
नृपश्रीदत्तपर्याख्यः त्रित्रिंशत्वर्षाणि राज्यकृत्।
जिनाह्ना नवमासश्च(३३।९।२४) अष्टाविंशतमो नृपः ॥ ३१ ॥
भीमराजमहीपालश्चत्वारिंशत्(च) वत्सरः।
मासैकदिनसप्तश्च (४०।१।७) एकोनत्रिंशमो नृपः ॥ ३२ ॥
नृपलक्ष्मणसेनाख्यः वर्षनवचतुर्मिता।
नवाह्ना राज्यं कर्तात्र (४९।०।९) नृपस्त्रिंशत्तमः शुभः ॥ ३३ ॥
सूरसिंहमहाराजः त्रिमासवर्षविंशतिः।
षट्दिनं (२०।३।६) भूमिं भोक्ष्यति एकत्रिंशत्तमो नृपः ॥ ३४ ॥
सूरसेनैकचत्वारि वर्षमासाष्टराज्यकृत्।
जिनाह्ना (४१।८।२४) शक्रपंथे च राज्यं रदमितो नृपः ॥ ३५ ॥
वीरसाहमहीपालः वर्षतिथिमित द्रुतम्।
ईशमास-सप्तदिनं (१५।११।७) नृपतौ(पः त्रित्रिंशः)राज्यकृत्॥३६॥
नृपः अखयराजाख्यः सप्तचत्वारि वत्सरः।
मासाष्ट-त्रिदशाह्नानि (४७।८।१३) चतुत्रिंशत्तमो नृपः ॥ ३७ ॥
नृपः श्रीदत्तनामेन पंचचत्वारि वत्सरः।
एकविंशादिनश्चैव नवमासश्च (४५।९।२१) राज्यकृत् ॥ ३८ ॥
नृपः श्रीहरदत्ताख्यः त्रयोविंशतिवत्सरः।
पंचविंशदिनैर्हीना (२२।११।५) राज्यं कर्ता महीतले ॥ ३९ ॥
सिद्धपालमहीपालः सप्तचत्वारि वत्सरान्।
तत्त्वसंख्यादिनैस्तत्र (४७।०।२५) सप्तत्रिंशत्तमो नृपः ॥ ४० ॥
राजा पर्वतराजाख्यः चत्वारिंशच्च वत्सरः।
त्रिविंशाह्ना ग्रहैर्मासा(४०।९।२३) राज्यं कृत्वा च मेदिनी ॥४१॥

श्रीडुंगरसीहनृपः नवचत्वारि वत्सरः ।
द्विमास-दिनसप्तश्च (४९।२।७) इन्द्रप्रस्थे च राज्यकृत् ॥ ४२ ॥

पृथ्वीपालश्च नृपतिः एकपंचाशवत्सरः ।
अष्टमास-दशाहानि (५१।८।१०) चत्वारिंशत्तमो नृपः ॥ ४३ ॥

प्रधानेन कृतं राज्यं नाम नारायणोऽभवत् ।
धर्मिष्ठः बुद्धिमान् धीरः संग्रामेषु च दुर्जयः ॥ ४४ ॥

पश्चात् अल्लाउराज्ञश्च पंचत्रिंशाच्च वत्सरः ।
एकविंशाह-मासत्रि (३५।३।२१) राज्यं कृत्वा च मेदिनी ॥ ४५ ॥

नृपहयातसिंहश्च सप्तविंशतिवत्सरः । (२७।०।०) ।
योगिनीपुरमध्ये च राज्यकृत् वंशनायकः ॥ ४६ ॥

नृपवीरव(म)सेनाख्यः एकविंशतिवत्सरः ।
द्विमास-त्रिदशाहा च (२१।२।१३) राज्यकृद् योगिनीपुरे॥ ४७ ॥

नृपधनपतिस्तत्र वर्षपंचत्रिसंज्ञ(ख्य)कः ।
मासाष्ट-नक्षत्रदिना (३५।८।२८) राज्यं भुक्त्वा महीतले ॥ ४८ ॥

महावलनृपख्यातः पंचचत्वारि वत्सरः ।
मासैक-तिथिसंख्याहा (४५।१।१५) राज्यकृत् इन्द्रप्रस्थके ॥ ४९ ॥

प्रत्युदरनृपस्तत्र तत्त्वसंख्या च वत्सरः ।
मासाष्ट-तिथिसंख्याहा (२५।८।१५) राज्यभोक्ता भविष्यति ॥५०॥

श्रीचित्रसेननृपतिश्चतुर्विंशतिवत्सरः ।
त्रिविंशाहा च षट्मास (२४।६।२३) राज्यकृत् योगिनीपुरे ॥ ५१ ॥

नृप असकपालाख्यः वर्षसप्तदशस्तथा ।
त्रिमास-सप्तदिवस(१७।३।७)राज्यं कृत्वा महीतले ॥ ५२ ॥

जितपालनृपस्तत्र धृतिसंख्या च वत्सरः ।
मासरुद्र-दशाहाश्च (१८।११।१०) भुवो मंडले राज्यकृत् ॥ ५३ ॥

नृपवल्लसुकस्तत्र त्रिंशत्वर्षाणि राज्यकृत् ।
दिवसैर्विंशति (३०।०।२०) राज्यं कृत्वा च महिमण्डले ॥ ५४ ॥

नृपकमा द्विचत्वारि वर्षं मासश्च पंचकः ।
दिनैकराज्यकृत्तत्र (४२।५।१) एकपंचाससमो नृपः ॥ ५५ ॥

श्रवणाख्यनृपः वर्षसप्तदिगूमासयुग्मकः ।
एकोनत्रिंशच्च दिनः (१७।२।२९) राज्यकृद् भुवि मण्डले ॥ ५६ ॥
नृपजीवनचित्राख्यः षड्विंशवत्सरस्तथा ।
वेदमास (२६।४।०) कृतं राज्यं इन्द्रप्रस्थ(स्थे) शुभे पुरे ॥ ५७ ॥
सुरतजगनामाख्यः त्रिदशवर्षमासदिगू ।
एकोनत्रिंशच्च दिना (१३।१०।२९) चतुःपंचासमो नृपः ॥ ५८ ॥
पंचत्रिंशच्च वर्षाणि मासैक-दिन चैकक (३५।१।१) ।
नृपसूरघटो नाम राज्यं कृत्वा महीतले ॥ ५९ ॥
वर्षत्रिविंशतिसंख्या दिवसा(श्च) षड्संख्यका (२३।०।६) ।
अदपतनृप इत्याख्यः राज्यकृत शक्रपंथके ॥ ६० ॥
श्रीहरहरनृपस्तत्र द्विचत्वारिंशवत्सरः ।
ईशमास-जिनाह्वा (४२।११।२४) स राज्यं कृत्वा च भूभुजः ॥६१॥
सुरंधनो नाम राजा पंचपंचाशवत्सरः ।
दिवसै षड्मितै (५५।०।६) राज्यं कर्ता निर्विघ्नं सर्वदा ॥ ६२ ॥
सुजांणसिंहनृपतिः एकचत्वारि वत्सरः ।
द्विमासाष्टदिनश्चैव (४१।२।८) राज्यं कृत्वा च तिष्ठति ॥ ६३ ॥
महीजनृपतिस्तत्र त्रिंशत्वर्षाष्टमासकः ।
त्रिविंशदिवसास्तत्र (३०।८।२३) राज्यकृत षष्ठिमो नृपः ॥६४॥
श्रीनाथनामनृपति अष्टचत्वारि वत्सरः ।
पंचमास-तत्त्वदिना (४८।५।२५) राज्यकृत योगिनीपुरे ॥ ६५ ॥
जीवनपालाख्यनृप द्विचत्वारिंशवत्सरः ।
षड्मास-पंचदिवस (४२।६।५) द्विषष्टिसंख्यको नृपः ॥ ६६ ॥
श्रीमत् उदयसेनाख्यः सप्तत्रिंशत(च) वत्सरः ।
पंचमास-जिनाह्वानि (३७।५।२४) त्रिषष्टिनृपराज्यकृत् ॥ ६७ ॥
अनंदजल इत्याख्यः चत्वारिंशच्च वत्सरः ।
द्विमासैकदिनैर्हीना (४०।१।२९) चतुषष्टिमितो नृपः ॥ ६८ ॥
अष्टाविंशतिवर्षाणि दिनैकमासदिगूमिता (२८।१०।१) ।
राजपालमहीभु(भो)क्ता पंचषष्टितमो नृपः ॥ ६९ ॥

नीलाधिपतिराजेन्द्र त्रिवर्षमासपंचकः (३।५।०) ।
राज्यं कृत्वा महीं त्यक्त्वा षष्टिषट्संख्यको नृपः ॥ ७० ॥
पांडवानां महावंशे नृपनीलाधिपोऽभवत् ।
राज्यहानि कृतं तेन रामवंशी नृपोऽभवत् ॥ ७१ ॥
नीलाधिपतिराजेन संग्रामं च कृतं बहुः ।
सप्तदश(१७)मितो युद्धं कृतं तेन महीतले ॥ ७२ ॥
पांडवानां महावंशे नीलाधिप महीभृतः ।
संग्राममध्ये स मृत्वा सैन्यामपि मृता बहुः ॥ ७३ ॥
सप्ततिसहस्रसंख्या(७००००)घोटकायां मृता जना ।
गजा शतमिता (१००) स्तत्र उष्ट्रा द्वाविंशतिशता (२२००) ॥७४॥
पदातयश्च एकोनत्रिंशत्सहस्र(२९०००)संख्यया ।
नीलाधिपति सह युद्धेन मृता संग्राममध्यके ॥ ७५ ॥
पांडवानां महावंशे राज्यं गत्वेन्द्रप्रस्थके ॥ ७६ ॥

॥ इति पांडववंशः[1] ॥ ११५ ॥

॥ तृतीयः सर्गः ॥

॥ रामवंशः ॥

अथातः रामवंशी च राजा शंखध्वजो जितः ।
सप्तत्रिंशत्सहस्रैश्च(३७०००)इन्द्रप्रस्थे पुरे गतः ॥ १ ॥
छत्रं च धारितं तेन शंखध्वजमहीपतिः ।
चतुचत्वारिके वर्षे (४४।०।०) राज्यकृद् योगिनीपुरे ॥ २ ॥
दिल्लीनामश्च भवति तत्रैव राज्यकर्मणि ।
पुनश्च भूपतिस्तत्र दिल्लीराज्यं सुखेन सः ॥ ३ ॥
एकदा समयेस्तत्र पमारो नृपविक्रमः ।
आगतः स्वपुरात् तत्र उतनवाऽप्रसूईके(?) ॥ ४ ॥
संग्रामश्चैककृत् तत्र पुनः संग्रामपंचकृत् ।
संखध्वजो नाम नृपः पतितस्तत्र संगरे ॥ ५ ॥

---

१. प्रति ख 'इति श्रीइंद्रप्रस्थप्रबंधे पाडववंशराज्यवर्णनो नाम द्वितीयः सर्गः ॥ श्लोक ११४ ॥

लक्षैकशीतिसहस्र(१८००००)अश्वा पतित संगरे ।
गजा सहस्र(१०००)संख्या च सहस्राष्ट(८०००)पदातयः ॥६॥
मृतो संखध्वजो राजा जितो विक्रमभूपतिः ।
संखध्वजगतं राज्यं विक्रमादित्ये तिष्ठति ॥ ७ ॥

॥ इति रामवंशी राज्य ?[1] ॥ ११४ ॥

॥ चतुर्थः सर्गः ॥

॥ परमारविक्रमवंशः ॥

कृतयुगे बलिर्दाता त्रेतायां रघुनन्दनः ।
द्वापरे कर्ण विख्यातः कलिकाले च विक्रमः ॥ १ ॥
दाता सूर दयालुश्च परदुःखस्य भंजकः ।
दिल्लीशविक्रमादित्यः उज्जेणीराज्यनायकः ॥ २ ॥
शकबंधी महीपाल शाककृत् तत्र भूपतिः ।
उज्जेणी वसता सम्यग् उद्वसा पुरयोगिनी ॥ ३ ॥
स्वल्पा वसति तत्रास्य संकर्ति दुर्जनेन सा ।
राज्यं कृत्वा इन्द्रप्रस्थे वर्षत्रिनव(९३)संख्यकः ॥ ४ ॥
विक्रमादित्यराजेन्द्र पमारो नायक शुभः ।
प्रथमश्च भवेत् राज्य दिल्लीनाथश्च जायते ॥ ५ ॥
पैठानकोटिभूपाला निर्जिता नृपतिस्तदा ।
शस्त्रशास्त्रप्रभावेन रणे शूरो नृपः शुचिः ॥ ६ ॥
परसैन्यपरामर्दी जीवन्मुक्ताश्च कोटिशः ।
चतुर्दशशतान्येव पंचाशप्तानि भारते ॥ ७ ॥
शकबंधी भवेद् राजा विक्रमार्को नृपोत्तमः ।
इष्टसिद्धि भवेत् तस्य स्मसाने निर्जितं रिपुः ॥ ८ ॥
योगिनीक्षेत्रपालाश्च सर्वे देवा सुखप्रदा ।
अग्निवेतालवेताल सेवायां च प्रवर्त्तते ॥ ९ ॥

---

१. प्रति ख – इति श्रीइंद्रप्रस्थप्रबंधे रामवंशीराज्यं वर्ननो नाम तृतीयसर्गः ॥ श्लोक १२२ ॥

सिंघासणबत्रीसी च वेतालपंचविंशका ।
पंचदंडातपत्रश्च चरित्रं विक्रमं शुभं ॥ १० ॥

तत्कृतं यन्न केनापि तद्दत्तं येन केनचित् ।
तत्साधितमसाध्यं यद्विक्रमार्केण भूभुजा ॥ ११ ॥

नृपविक्रमसेनोभूत् वर्षविंशदिनैककं (२०।०।१) ।
राज्यं कृत्वा मही भुक्ता द्वितीयो राज्यनायकः ॥ १२ ॥

असमंदपालनृपतिः वर्षषोडश(१६)कस्तथा ।
मासनववेददिना (१६।९।४) राज्यकृत् तृतीयो नृपः ॥ १३ ॥

विक्रमसेननृपतिः असमंदेन मारितः ।
पश्चात् राज्य कृतं तेन दिल्लीशो भविता भुवि ॥ १४ ॥

चन्द्रपालनृपस्तत्र वर्षैकविंशतिर्मितः ।
अष्टादशदिनै (२१।०।१८) राज्यं कृतो वेदमितो नृपः ॥ १५ ॥

एकोनविंशतिवर्षमासदिग्रुदिनईश्वरा (१९।१०।११) ।
सद्पालकृतं राज्यं पंचमो योगिनीपुरे ॥ १६ ॥

देशपालोष्टादशश्च वत्सरा दिनद्वादशः (१८।०।१२) ।
कृतं राज्यं मही भुक्ता पमारो षडसंख्यकः ॥ १७ ॥

नरसिंहपालनृपतिः वर्षसप्तश्च राज्यकृत् (१७।०।०) ।
दानी मानी धनाढ्यश्च विख्यातः सप्तमो नृपः ॥ १८ ॥

वीरपालनृपस्तत्र वर्षद्वाविंशसंख्यकः ।
त्रिमासदिनतत्त्वैश्च (२२।३।२५) राज्यकृत् अष्टमो नृपः ॥ १९ ॥

रामपाल सप्तवर्षरुद्रमासत्रिदिग्रुदिना (७।११।१३) ।
कृतं राज्यं मही भुक्ता नवमो संज्ञको नृपः ॥ २० ॥

गोविंदपालनृपतिः अष्टविंशतिवत्सरः ।
मासैकनक्षत्रदिना (२८।१।२७) कृतं राज्यं महीतले ॥ २१ ॥

रविवर्षपंचमासश्च अष्टाविंशतिका दिना (१२।५।२८) ।
सत्यपालकृतं राज्यं रुद्रश्च नृपसिद्धिदः ॥ २२ ॥

तीर्थपालनृपस्तत्र चतुर्दशाश्च वत्सराः ।
नवमासा द्विविंशाहा (१४।९।२२) राज्यं द्वादशसंज्ञकः ॥ २३ ॥

हरपाल त्रिदशो वर्ष अष्टमास चतुर्दिन (१३।८।४)।
कृतं राज्यं महामानी संख्या त्रयोदशो नृपः ॥ २४ ॥
भीमपाल ईशावर्षदिग्मासत्रिदशोदिनः (११।१०।१३)।
कृतं राज्यं महीपृष्ठे चतुर्दश नृपोत्तमः ॥ २५ ॥
नृपो मदनपालाख्य वर्षसप्तदशास्तथा।
षट्मासतत्त्वदिवसा (१७।६।२५) राज्यं पंचदश स्मृतः ॥ २६ ॥
कर्मपालनृपस्तत्र वर्षपंचदशास्तथा।
द्विमासदिवसास्तत्व (१५।२।२५) कृतं षोडशमं शुभं ॥ २७ ॥
नृपविक्रमपालाख्य एकोनविंशवत्सरः।
ईश्वरोमासत्रिदिन (१९।११।३) क्रियते राज्य मेदिनी ॥ २८ ॥
तिलोकचन्दनृपतिः द्विवर्षविंशतिर्दिनः (२।०।२०)।
महीं भुज्यत छत्रेण अष्टादशमितो नृपः ॥ २९ ॥
विक्रमचन्दनृपतिः वर्षद्वादशसंज्ञकः।
सप्तमासैकोनविंशदिवसा (१२।७।१९) राज्य भोक्ष्यति ॥ ३० ॥
कमालचन्दनृपतिः द्विवर्षश्च दिनद्वयं (२।०।२)।
भोक्ष्यति ह्येकछत्रेण नृपति विंशमो शुभः ॥ ३१ ॥
रामचन्द्रनृपस्तत्र वर्षत्रिदश(१३)संज्ञकः।
रुद्रमासाष्टदिवसा (१३।११।८) क्रियते राज्यसत्तमः ॥ ३२ ॥
नृपहरधरचंदाख्यः चतुर्दशाश्च वत्सरः।
नवमासजिनाहानि (१४।९।२४) द्वाविंशो नृप राज्यकृत् ॥ ३३ ॥
कल्याणचन्दनृपतिः वर्षदिग्मासपंचक।
चतुर्दिनश्च (१०।५।४) राज्यं च क्रियते योगिनीपुरे ॥ ३४ ॥
द्विमास षोडशो वर्ष षट्दिनं प्रमितं शुभं (१६।२।६)।
राज्ञा श्रीभीमचन्देन भोक्ष्यते योगिनीपुरं ॥ ३५ ॥
लोकचन्दनृपः श्रीमान् वर्षषट्त्रिंशसंज्ञकः।
त्रिमासैकदिनश्चैव (३६।३।१) ह्येकच्छत्रेण भोक्ष्यते ॥ ३६ ॥
गोविन्दचन्दनृपतिः एकविंशतिवत्सरः।
सप्तमासकि(र्क) दिवसा (२१।७।१२) षड्विंशो नृप भोक्ष्यति ॥३७॥

कुवागोविन्दचंदाख्य वर्षैकं राज्यकृच्छुभः (१।०।०)।
सप्तविंश नृपः श्रीमान् भोक्ष्यति योगिनीपुरं ॥ ३८ ॥

हरपरमनृपस्तत्र सप्तवर्षमासपंचकः।
षोडशै दिवसै (७।५।१६) भोक्ष्यति शक्रपंथके ॥ ३९ ॥

गोविन्दपरमो नाम्न वर्षविंशद्विमासकः।
दिनसप्तदशस्तत्र (२०।२।१७) राज्यं भोक्ष्यति भूपतिः ॥ ४० ॥

भवपरमनामेन तिथिवत्सरराज्यकृत्।
माससप्तधृतिदिन (१५।७।१८) त्रिंशमो नृप भोक्ष्यति ॥ ४१ ॥

महापरमराजेन्द्र षड्वर्षमाससप्तकः।
एकोनत्रिंशदिवसा (६।७।२९) भोक्ष्यति एकत्रिंशकः ॥ ४२ ॥

जयसेनधृतिर्वर्षमासपंचदिनद्वयं (१८।५।२)।
भोक्ष्यति ह्येकछत्रेण द्वाविंशत्तमभूपतिः ॥ ४३ ॥

मलालसेनेन्नृपतिः वर्षार्कमाससागर।
द्विदिन (१२।४।२) भोक्ष्यते राज्यं त्रयत्रिंशत्तमो नृपः ॥ ४४ ॥

कपूरसेननृपतिः तिथिवत्सरसंज्ञकः।
सप्तमासश्च द्विदिन (१५।७।२) भोक्ष्यते राज्य मेदिनी ॥ ४५ ॥

मधुसेनमहीपाल ईशवर्षत्रिमासकः।
त्रयोदशादिन (११।३।१३) श्चैव ह्येकछत्राणि भोक्ष्यते ॥ ४६ ॥

देवसेनमहीपाल विंशवर्षैकमासकः।
नक्षत्रदिवसस्तत्र (२०।१।२७) भोक्ष्यते मेदिनी वरा ॥ ४७ ॥

शुभसेन पंचवर्ष नवाह्ना दशमासक (५।१०।९)।
उर्व्वीं च भोक्ष्यते राजा सप्तत्रिंश नृपोत्तमः ॥ ४८ ॥

नृपजुगपालसेनाख्य वेदवर्षाष्टमासकः।
एकविंशादिनं (४।८।२१) भोक्ष्य पृथ्वी ष्टत्रिभूपतिः ॥ ४९ ॥

हरसेननृपस्तत्र वर्षद्वादशसंज्ञकः।
पंचविंशतिदिना (१२।०।२५) स्तत्र ह्येकछत्रेण भोक्ष्यते ॥ ५० ॥

---

१. मलीलसेन (ख)

रहतसेनाष्टवर्षाणि मासैकादशकस्तथा ।
दिवसै पंच (८।११।५) भोक्ष्यंते एकछत्रेण मिदिनी ॥ ५१ ॥

द्विवर्ष लक्ष्मणसेन द्विमासाष्टदशैर्दिना (२।२।१८) ।
भोक्ष्यति योगिनीपुर्यां राज्यं तत्र मनोहरं ॥ ५२ ॥

दामोदरसेननृपः षड्विंशवत्सरः शुभः ।
द्विमास एकविंशाहा (२६।२।२१) भोक्ष्यति मेदिनी शुभा ॥५३॥

नृपनराइणसेन वर्षाणि ईश्वरै शुभा ।
मासपंच षोडशाहा (११।५।१६) क्रियते राज्यमुत्तमम् ॥ ५४ ॥

माधोसिंघनृपस्तत्र वर्षसप्तदशैर्मितः ।
मासैकदिवसषड्भि (१७।१।६) भोक्ष्यते पृथवी शुभा ॥ ५५ ॥

अनीसिंघमहाराज वत्सराणि चतुर्दश ।
मासपंचमितं राज्यं (१४।५।०) करिष्ये[1] योगिनीपुरे ॥ ५६ ॥

राजसिंघः रविर्वर्ष त्रिमास जिनवासरा (१२।३।२४) ।
कृतराज्यः धराधीश महीतले मनोहरः ॥ ५७ ॥

नरसिंघः महावीर दिग्वर्ष मास अष्टकः ।
एकादशदिनास्तत्र (१०।८।११) भोक्ष्यते पृथवी वरा ॥५८॥

धनवदसिंह[2]नृपतिः पंचचत्वारि वर्षकः ।
तिथिर्दिना (४५।०।१५) भोक्ष्यते च राज्यं सद्योगिनीपुरे ॥५९॥

नृपश्रीजीवनसिंघ द्विवर्ष मास अष्टकः ।
तत्त्वसंख्या दिनास्तत्र (२।८।२५) राज्यकृद् योगिनीपुरे ॥ ६० ॥

दिल्लीपति इतिर्नाम कथितः राज्यनायकः ।
भोक्ष्यते छत्रधार्यं च महापुरमनोहरः ॥ ६१ ॥

उद्वसा शाक्रपंथा च जायते तत्र सा धरा ।
विक्रमादित्यवंशश्च कृतं राज्यं मनोहरं ॥ ६२ ॥

द्विनवसप्तअंकाश्च(७९२) तत्र राज्यं च भोक्ष्यते ।
उज्जयिन्यां स्थितास्तत्र इन्द्रप्रस्था वशीकृता ॥ ६३ ॥

---

१. करिष्येद् २. वनवदसिंघ (ख)

उद्वसा जायते तत्र शक्रपंथा महापुरः ।
तत्र विह्लणदेनाम तुंवरक्षत्रियः शुभः ॥ ६४ ॥

सामान्यश्च गृहस्थश्च पुरे तत्र वसेत् सदा ।
तस्य पुरोधात्मजश्च पुरी वाराणसीं गतः ॥ ६५ ॥

पठितं ज्योतिषं शास्त्रं आगमं बहवः श्रुतं ।
सरस्वत्याः प्रसादेन महाविद्याधरोऽभवत् ॥ ६६ ॥

गृहागतः विप्रसुतः शुभेह्नि शुभवासरः ।
मुहूर्त्तं साधितं तेन यजमानगृहे गतः ॥ ६७ ॥

भो विल्हणाख्य श्रोतव्यः यद्दास्यं त्वद्गृहे नहि ।
मया च कुरुते तुभ्यं अनंगपाल भूपतिः ॥ ६८ ॥

त्वद्वंशे नैव श्रोतव्यं कदाचिदपि वाक्यतः ।
स एव राज्यं प्राप्यते मुहूर्त्तस्य प्रभावतः ॥ ६९ ॥

दिल्लीपुर्यां शुभेह्नि च राजमन्दिर वासयेत् ।
अभीचसमये तत्र खील्यां च धर धारयेत् ॥ ७० ॥

सप्ततोलकमानेन अंगुल एकविंशति ।
स्वर्णखील्यां च कर्त्तव्यं धरा पृष्ठे च धारयेत् ॥ ७१ ॥

समुहूर्त्ते वेदपाठे च धारयेद् धरणीतले ।
विक्रमादित्य राज्यात् स द्विनवसप्त(७९२)वत्सरे ॥ ७२ ॥

वैशाखमासे रम्ये च कृष्णपक्षे मनोहरे ।
त्रयोदश्यां तिथौस्तत्र अभीच साधितं शुभं ॥ ७३ ॥

व्यास श्रीजगजोताख्यः अनंगपाल तुंवर ।
दिल्लीराज्यं च शुभेऽह्नि दत्तं च वेद विप्रवित् ॥ ७४ ॥

सा खिल्ली शेषनागस्य शिरसि क्षुभिता शुभा ।[1]
तदा व्यास वचं वक्ति राज्यं च अचलं भवेत् ॥ ७५ ॥

त्वत्कुले सर्वदा राज्यं स्थास्यति भुवि मंडले ।
दानं च बहवस्तत्र दत्तं व्यासस्य भूपतिः ॥ ७६ ॥

---

१. शिरे सा क्षुभिताः ।

आशीर्वाद तदा दत्तं चिरं जीव नृपोत्तमः।
चिरं तव प्रभावोऽस्मिन् चिरं पालय मेदिनीम् ॥ ७७ ॥

दान मान कृतं तत्र स विप्रः स्वगृहे गतः।
क्षेत्राधिपश्च ये देवाः बुद्धिभ्रष्टं च कारयेत् ॥ ७८ ॥

अनंगपाल नृपतिः खिल्या उत्पाटिता वराः।
रक्ता भ्रतावरा क्षिल्ल्याः(?) स्वदृष्टया चैव पश्यति ॥ ७९ ॥

तदा मति तुंवरस्य चलिता विप्रवाक्यतः।
आहूय पुनः विप्रस्य कथितं वृत्तान्तपूर्वकम् ॥ ८० ॥

तत्र किं क्रियते विप्रः त्वद्वाक्यस्य प्रमाणतः।
मया हृता बुद्धिः भ्रष्टा खिल्लिका ढिल्लिका कृता ॥ ८१ ॥

दिल्ली ढिल्ली इति नाम पतिता पृथिवीतले।
तदा व्यासो वचो वक्ति शृणु तुंवरभूपतिः ॥ ८२ ॥

अनंगपाल नृपति यद्बुद्धया त्वया कृता।
सा बुद्धि श्रेयसी नास्ति पुनः सा धरधारिता ॥ ८३ ॥

एकोनविंशत्यंगुल्या धरा पीठे गता शुभा।
तदा व्यासो वचो वक्ति स्थास्यं एकोनविंशतिः ॥ ८४ ॥

त्वद्वंशे वर्त्तते राजा स्थास्यंति पृथवीपतिः।
आगमस्य प्रमाणेन वचनं कथितं वरं ॥ ८५ ॥

तुंवरात् चहूआणश्च पठाणा मुद्गला वरा।
लोदी च कच्छा सेषाश्च पुनश्च चकथा मता ॥ ८६ ॥

स्थास्यंति म्लेच्छा मेदिन्यां पश्चात् राजा भविष्यति।
मांडवे सर्वम्लेच्छाश्च क्षयं यास्यति संगरात् ॥ ८७ ॥

राइवंशा नृपास्तत्र भविष्यति च मेदिनी।
योगिनीपुरराज्यश्री भोक्ष्यति ह्येकछत्रतः ॥ ८८ ॥

सीसोद्या नृपतिस्तत्र इन्द्रप्रस्थे भविष्यति।
पुनः म्लेच्छा भविष्यन्ति ढिल्यां च प्रवरे पुरे ॥ ८९ ॥

लोकवाक्यषट्पदः —

अनंगपाल चक्कुवै(वदवै)सति जोइ सीउ कीली ।
रे तुंवर मति हीण करी किल्ली तै ढिल्ली ।
कहै व्यास जगजोति अंग आगम हूं जाणुं ।
तुंवर तै चहुवाण पुन्न ह्वोसी तुरकाणौ ।
मांडव निकंद दिल्ली धरा, एक राव जीव जगवै ।
नवसत अंत मेवाड पति, एकछत्र महि भोगवै ॥ ९० ॥

शतनवमिता संख्या पुनः सप्तश्च संयुता ।
अधिमासयुता मध्ये शाक विक्रमकालतः ॥ ९१ ॥

तुंवरः स्थापितः सोऽपि अधिमासयुता अपि ।
योजनीया तदा तत्र म्लेच्छातो राज्य यास्यति ॥ ९२ ॥

॥ इति परमारः २०६ ॥[1]

॥ पंचमः सर्गः ॥

॥ अथ तुंवरः ॥

एकोनविंशति राजा त्वत्कुले स्थास्यति नृपः ।
अनंगपाले नृपतिः ढिल्यां राजपतिर्भवेत् ॥ १ ॥

आदौ विल्हणदे नामः वर्ष एकोनविंशतिः ।
पंचमासश्च त्रिदिन अष्टादशघटी (१९।५।३।१८) मितं ॥ २ ॥

गंगेवैं नृपति वर्ष एकविंशति(त्रि)मासकः ।
त्रिदिनाष्टघटीसंख्या (२१।३।३।८) राज्यकृद् योगिनीपुरे ॥ ३ ॥

एकोनविंशवर्षाणि दिना एकोनविंशतिः ।
मास षट् ईशघटिका (१९।१९।६।११) पृथकुँ राज्यकृद् भुवि ॥४॥

सहदेवें विंशवर्षाणि सप्तमास तिथिर्घटी ।
नक्षत्रसंख्या दिवसा (२०।७।२७।१५) योगिनीपुरराज्यकृत् ॥५॥

तिथिसंख्या च वर्षाणि त्रिमासाष्टदिनैस्तथा ।
त्रिघटी श्रीयुतंयुत (१५।३।८।३) राज्यकृद् योगिनीपुरे ॥ ६ ॥

---

१. इति श्रीइंद्रप्रस्थप्रबंधे परमारराज्यवर्णनो नामः चतुर्थः सर्गः ॥ ४ ॥ (ख)

वर्षचतुर्दश मासचत्वारि दिवसा नव ।
घटा नवमितं (१४।४।९।९) राज्यं नृप कुन्दयुतः कृतं ।। ७ ।।
नरपाल मासस्प्त वर्षषड्विंशतिस्तथा ।
ईशाहा विंशघटिका (२६।७।११।२०) राज्यकृत् सप्तमो नृपः ।।८।।
वत्सराजे एकविंश वर्ष मासद्वयं तथा ।
त्रिदशाहा ईशघट्या (२१।२।१३।११) कृतं राज्यं मही मुदा ।।९।।
एकविंशतिवर्षाणि मासषट् दिनपंचकः ।
ईशघट्या वीरपाले (२१।६।५।११) राज्यकृत् योगिनीपुरे ।।१०।।
विंशवर्ष वेदमास वेदाहाष्टघटी (२०।४।४।८) मता ।
गोपाल नृपतिस्तत्र भोक्ष्यति पृथवी शुभा ।। ११ ।।
तोह्लणें नाम नृपतिः धृतिवर्ष त्रिमासकः ।
पंचाहाष्टघटी (१८।३।५।८) तुल्य राजा रुद्रमितोऽभवत् ।। १२ ।।
जुलखैरी विंशतिवर्षा दिग्मास दिवसादयः(श) ।
षोडशघटिका वाच्या (२०।१०।१०।१६) नृप द्वादशसंज्ञकः ।।१३।।
क्रमात् षोडशवर्षाणि वेदमास दिनत्रयं ।
घट्येक (२१।४।३।१) तसखैरी नाम राज्यकृद् योगिनीपुरे ।। १४ ।।
राजा कवरपालाख्यः एकविंशतिवत्सरः ।
त्रिमास रुद्रदिवसाष्टघटी (२१।३।११।८) भोक्ष्यते मही ।। १५।।
अनंगपाले नृपतिः वर्ष एकोनविंशतिः ।
षड्मास धृतिदिवसा दिग्घटी (१९।६।१८।१०) भुवि भोक्ष्यते।।१६।।
तेजपालश्च मासैक जिनवर्षश्च षट्दिनाः ।
एकादशघटीमानं (२४।१।६।११) ह्येकछत्रेण भोक्ष्यति ।। १७ ।।
मोहपाल तिथि वर्ष त्रिमास ईश्वरा घटी ।
दिवसा सप्तदश ख्याता(१५।३।१७।११)मही भोक्ष्यति सो नृपः।।१८
स्कंदपालाख्य नृपः नवमासार्कवास(वत्स)रः ।
षोडशाहा च (१२।९।१६।०) भोक्ष्यंति महाबलपराक्रमात् ।।१९।।
तुंवरपृथीराजाख्यः जिनवर्ष त्रिमासकः ।
षट्दिना सप्तदशक(२४।३।६।१७)घटिका महि भोक्ष्यति ।।२०।।

एकोनविंश नृपतिः तुंवराणां कुले भवेत् ।
पुनश्च पृथीराजाख्यः भुवि मध्ये च वर्त्तते ॥ २१ ॥

अजमेरात् गतस्तत्र चहूआंण नृपसत्तमः ।
राजा वीसलदेनामः कुरुक्षेत्रे च आगतः ॥ २२ ॥

वीसल-पृथीराजाख्यः समरं च कृतं बहुः ।
लक्षैकसंख्या सेन्या च एकषष्टिसहस्रकः(१६१०००) ॥ २३ ॥

पृथीराजस्य पार्श्वे च सेन्या च वर्त्तते तदा ।
चत्वारिंशत्सहस्राणि(४००००)चहूआणा सेन्यया शुभा ॥ २४ ॥

संग्रामं च कृतं तत्र अतीव कुरुक्षेत्रके ।
लक्षसेन्या च पतिता तुंवरो पतितो भुवि ॥ २५ ॥

अन्ये सर्वे नृपा नष्टाः चहूआण जितो नृपः ।
आगतस्तत्र ढिल्यां च छत्रं च धारितं मुदा ॥ २६ ॥

॥ इति तुंवरवंश-राज्य ॥ २३२ ॥[1]

॥ षष्ठः सर्गः ॥

॥ अथ चहूआणः ॥

आदौ वीसलदेनाम रसवर्षैकमासकं ।
वेदाहा वेदघट्या च (६।१।४।४) प्रथमं राज्य वर्त्तते ॥ १ ॥

गंगेव पंचवर्षाणि द्विमास त्रिदनस्तथा ।
एकादशघटीमानं (५।२।३।११) द्वितीयो मही भुज्यते ॥ २ ॥

पहाडी अष्टवर्षाणि मासैक दिनपंचक ।
घटी एकमितं (८।१।५।१) राज्यं तृतीयः कुरुते भुवि ॥ ३ ॥

स्यामसु सप्तवर्षाणि वेदमास दिनद्वयं ।
घट्यष्टमानमित्याहुः (७।४।२।८) चतुर्थ नृप राजते ॥ ४ ॥

विहाडी वेदवर्षाणि वेदमास दिनाष्टकं (४।४।८।०) ।
ह्येकछत्रेण पृथवी भुज्यते पंचमो नृपः ॥ ५ ॥

---

१. इति श्रीइंद्रप्रस्थप्रबंधे तुंवरराज्यवर्णनो नाम पंचमः सर्गः ॥ (ख)

गंगेव वहूनिवर्षाणि मासैक दिनपंचक।
ईश्वरघटिकामानं (३।१।५।११) षट्संख्य नृप राजते ॥ ६ ॥
पृथीराज महीपाल क्रमात् षोडशवत्सरः।
एकविंशदिन स्तत्र मासैक घटिकात्रयं (१६।१।२१।३) ॥ ७ ॥
पृथीराजस्य सेन्यायां सामंत षोडश स्मृतः।
शत(१००)सूर महावीर्यः अन्यसेन्या स्थिता बहुः ॥ ८ ॥
कनवजस्थितराज श्रीजयचंद नृपोत्तमः।
तत्पुत्री अतिरूपा च नाम संयोगिता वराः ॥ ९ ॥
अतिवलेन सा नीता सूरसामंतयोगतः।
राष्ट्रवंशनृपस्तत्र जयचंद जितो न सः ॥ १० ॥
अतीवरूपा सा नारी किन्नरीव सची मता।
वशीभूत स्थितस्तत्र गृहमध्ये वसेत् सदा ॥ ११ ॥
मासैः पंचदशै(१५)स्तत्र नागतो च गृहाद् बहिः।
संयोगितासह प्रीतिः भोगं भुज्यति स नृपः ॥ १२ ॥
वणिज् संकरनामाख्यकृतं च मलचिन्तितं।
सूरसांवत सर्वेपि चिन्तावान् जायते तदा ॥ १३ ॥
सूर सांवत मिलिता चिन्तामग्ना सदैव हि।
एकेन दिवसे तत्र मारितं संकरस्य च ॥ १४ ॥
मृतं संकरदासं च पूर्वकर्मप्रसादतः।
न गतिर्जायते तस्य स राज्ञा श्रूयते नहि ॥ १५ ॥
संकरात्मजसीहाख्यः कृतं गुप्तनिमंत्रिणं।
नष्टः स चार्द्धरात्रेण परिवारसमन्वितं ॥ १६ ॥
सेठौलान महाग्रामे परिवार धृतं मुदा।
गतं स गजनीपुर्यां साहाग्रे कथितं तदा ॥ १७ ॥
त्वं सर्वत्र धराधीश महावलपराक्रमी।
यदि इच्छसि त्वं राज्यं दिल्ली पुर्यां नृपोत्तमः ॥ १८ ॥
तदा गच्छसि त्वं शीघ्रं प्राप्यसि राज्यमुत्तमम्।
स्त्रीवशेन पृथीराज भवतीह न संशयः ॥ १९ ॥

पठान गजनी गौरी चलितो गजिनीपुरात् ।
योगिनीपुरपार्श्वे च सेन्या सह स आगतः ॥ २० ॥
चत्वारिंशत एकयुक्तः सहस्र परिकीर्तितः ।
शतसप्तयुतस्तत्र पुनश्च द्व्यसप्तति (४१७७२) ॥ २१ ॥
एताश्वासह आगत्य संग्रामं च कृतं बहु ।
सूरसांवत सर्वेपि समरं तत्र कारयेत् ॥ २२ ॥
वर्ष चत्वारि प्रमितं समरं तत्र जायते ।
पृथीराजो न जानाति युद्धं च अतिदारुणं ॥ २३ ॥
सूरसांवतसेन्या च बहु पतिता तस्य च ।
पृथीराज धराधीश पठानेन गृहीतवान् ॥ २४ ॥
चहूआंणपृथीराजस्य ढिल्लीराज्यं तदा गतं ।
म्लेच्छराज इंद्रप्रस्थे भविष्यत्तत्र योगतः ॥ २५ ॥

॥ इति चहूआंणवंशः ॥ २५७ ॥[1]

॥ सप्तमः सर्गः ॥

॥ अथ पठान वा मुगलः ॥

विक्रमात् सप्तद्वि(ब्धि?)द्वैक (१२२७(४८?)) वर्षे च प्रवरे वरे ।
चैत्रकृष्णत्रयोदश्यां म्लेच्छराज्यं च जायते ॥ १ ॥
आदौ च गजनीगोरी वर्षसंख्या चतुर्दश ।
बाणमासं त्यष्टिदिना घटिका च त्रयोदश(१४।५।१७।१३) ॥२॥
वर्षत्रयं मासमेकं त्रयोदशदिनं तथा ।
घटीपंचमितं राज्यं (३।१।१३।५) समसदीन कुर्वती ॥ ३ ॥
वर्षविंश त्रिमासं च दिनसप्त भमिता घटी (२०।३।७।२७) ।
कुतबदीनकृतं राज्यं तृतीयो योगिनीपुरे ॥ ४ ॥
एकत्रिंशत्मितं वर्षं त्रिमासं दिनदिग्मितं ।
एकोनविंशतिघटी (३१।३।१०।१९) पेरोजस्याह राज्यकृत् ॥ ५ ॥

---

१. इति श्रीइंद्रप्रस्थप्रबंधे चहुवाणराज्यवर्णनो नाम षष्ठः सर्गः ॥ (सं)

त्रयवर्षं द्वयं मासं एकादशादिनं तथा ।
एकविंशघटीमानं (३।२।११।२१) अमृतसाहि राजते ॥ ६ ॥
एकत्रिंशमितं वर्षं मासषट् दिवसैककं ।
भमितं घटिका (३१।६।१।२७) राज्यं अलावदीन भोक्षते ॥ ७ ॥
एकविंशति वर्षाणि पंचाहा भमिता घटी (२१।०।५।२७) ।
मिसरदीन कृतं राज्यं सप्तमो योगिनीपुरे ॥ ८ ॥
एकविंशति वर्षाणि षण्मास दिनमेककं ।
ऋक्षसंख्या घटी (२१।६।१।२७) राज्यं गयासदीन कृद्भुवि ॥९॥
घुरद्समसदीनाख्य वर्षैक मासषड्मितं ।
तिथ्याहर्कघटीमानं (१।६।१५।१२) नवमो राज्य भोक्ष्यति ॥१०॥
जलालदीन षड्वर्ष षड्मास षड्दिनस्तथा ।
घटिका दिग्मिता(६।६।६।१०)स्तत्र राज्यकृद् योगिनीपुरे ॥ ११ ॥
रुकनूदीनाख्य षड्मास त्रयोदशदिनावधि ।
घटिका षड्मिता(०।६।१३।६)राज्यं एकादशमितो नृपः ॥ १२ ॥
आलादीन जलावदीन वर्ष एकोनविंशतिः ।
त्रिमास दिनतिथ्याश्च घटी एकादश(१९।३।१५।११)स्मृताः ॥१३॥
जंबूद्वीपे च बहुले मर्यादा च कृता बहु ।
आज्ञाकारि कृता राजा समरे दुर्जयो महा ॥ १४ ॥
सहस्रत्रय संख्या(३०००)च महीपाला सैन्यनायकः ।
एकचत्वारि एकश्च(१४१)गढाधीश नृप स्थिता ॥ १५ ॥
मार्गे सुचालितं तेन गढाधीशवरा नृपाः ।
लोभाधिक्यलावदीनः क्षमावान् नहि सर्वदा ॥ १६ ॥
अलादीनलावदीन समुद्रसाधनार्थं सः ।
गतं समुद्रमध्ये च पुन स आगतो नहि ॥ १७ ॥
तस्यात्मज पूर्णभाग्य सुलतानअलावदी ।
राज्य स्थापितवान् सर्वं मिलिता भूपतिर्वरा ॥ १८ ॥
वर्षषड् मासषट्कं च दिनाष्ट घटीष्टकं (६।६।८।८) ।
कृत राज्य सुलतानेन त्रयोदश नृपोत्तमः ॥ १९ ॥

सुलतान अलावदीन अपुत्रो जायते तदा ।
लघुभ्रातृ कुतबदीन राज्यस्थापितवान् तदा ॥ २० ॥

स्थानस्था ये गढाधीशा आज्ञा च नहि मानिता ।
चतुर्दिश स्थिता भूपा स्वस्वराज्यं प्रकुर्वति ॥ २१ ॥

ये दुर्मदा नृपास्तत्र नागतास्तत्र सन्निधौ ।
शतक्रोश(१००)समीपे सा कस्मिन् कस्मिन् प्रमाणकृत् ॥ २२ ॥

केचित् वाक्यं इति ब्रूयात् पठानो मुगलस्तथा ।
शेष अन्येपि म्लेच्छा सद्‌बला राज्य कुर्वति ॥ २३ ॥

एकादशमिता संख्या राज्यकृद् योगिनीपुरः ।
.... ॥ २४ ॥

विक्रमात् त्रिनवत्रयोदश (१३९३) ।
राज्य स्थापित स च म्लेच्छनायकः ॥ २५ ॥

आदौ कुतबदीनाख्य वेदवर्ष द्विमासकः ।
दिग्दिना रुद्रघटिका (४।२।१०।११) योगिनीपुरराज्यकृत् ॥२६॥

गरासदीनाख्य नृपः अब्धिवर्षाब्धिमासकः ।
एकादश दिनास्तत्र घटी एकोनविंशति (४।४।११।१९) ॥ २७ ॥

महमदहठीनाम सप्तविंशति वत्सरः ।
त्रिमासश्च तिथिदिना सप्तसंख्या घटी(२७।३।१५।७)मिता ॥२८॥

मासपंच त्रिदिवस नाडिका सप्तभिर्मिता (०।५।३।७) ।
तुंगलसाहि नामा च चतुर्थ राज्यनायकः ॥ २९ ॥

सार्द्धषण्मास संख्या च घटी पंचदशस्तथा (०।६।१५।१५)(?) ।
पंवकसाहिन्नृपति पंचमः स धराधिपः ॥ ३० ॥

नृपो दौलितखानाख्यः सप्तवर्षैकमासकः ।
धृतिदिनैकघट्या च (७।१।१८।१) संख्या रसमितो भवेत् ॥ ३१॥

अष्टवर्षाष्टमासश्च दिना धृति घटीद्वयं (८।८।१८।२) ।
कृतः खिजरखानाख्यः सप्तमः म्लेच्छनायकः ॥ ३२ ॥

रुद्रवर्षैश्वरामासः दिवसा एकोनविंशतिः ।
घटीदशमितं राज्यं (११।११।१९।१०) षांनममारखः शुभः ॥ ३३ ॥

नृप महममदसाहि रविवर्षैकमासकः ।
दिनैक सप्तघटिका (१२।१।१।७) नवमो राज्यनायकः ॥ ३४ ॥
अलावरदीखांन संज्ञो त्रिमास दिवसा दशा ।
नवसंख्याघटी (०।३।१०।९) तत्र राज्यकृद्योगिनीपुरे ॥ ३५ ॥
एकस्मिन् समये तत्र श्रीमल्लाभपुरे वरे ।
अकस्मात् शिवरूपेण कर्मयोगेन आगतः ॥ ३६ ॥
लोदीगृहे गतः सोऽपि लोदी भक्ति कृता बहुः ।
तुष्टमानवचं ब्रूयात् शृणु त्वं म्लेच्छनायक ॥ ३७ ॥
तुष्टमाने मया दत्तं राज्यं वंशाचतुष्टयम् ।
इंद्रप्रस्थपुरीमध्ये राज्यनायक त्वं भव ॥ ३८ ॥
इदं वचनं संभाष्य सं(स)योगी अतरिष्यभूत् ।
न दृष्टः स पुन योगी तदा वाक्य प्रमाणकृत् ॥ ३९ ॥
अजीनअलावदी नाम लोदी मनसि चिन्तितं ।
सप्तदशशतस्तत्र पंचाशीतिश्च (१७८५) संज्ञकः ॥ ४० ॥
सैन्या च संख्या संजाता आगतो योगिनीपुरे ।
अलावरदी नृपः सोऽपि एकस्मिन् दिवसे ततः ॥ ४१ ॥
नगराद् बहि आगत्यः कृतमाखेटकं शुभं ।
अकस्मात् आगतो लोदी संग्रामस्तत्र जायते ॥ ४२ ॥
न ज्ञातं कपटस्तत्र भग्ना सेन्या पुरं दिसि ।
एकषष्टिसहस्राणि (६१०००) संख्या सैन्या पलायिताः ॥ ४३ ॥
पठानं मारितं तत्र जितो लोदी महाबली ।
गतं राज्यं पठानस्य लोदी राज्यं प्रवर्तते ॥ ४४ ॥

॥ इति पठानवंशराज्यः ॥ ३०१ ॥[1]

---

१. ख. इति पठानराज्यवर्णनो नाम सप्तमः सर्गः ।

॥ अष्टमः सर्गः ॥

॥ अथ लोदी ॥

अजीत अलावदीस्तत्र वर्ष सप्तदश स्मृतः ।
मासैक दिवसाष्टौ च (१७।१।८।०) राज्यकृत् प्रथमो नृपः ॥ १ ॥

श्रीवहगे(डो)लषांस्तत्र त्रिवर्षश्च द्विमासकः ।
नवाहा पंच घटिका (३।२।९।५) द्वितीयो म्लेच्छराज्यपः ॥ २ ॥

साहिसिकंदरश्चैव वर्ष अष्टादश स्मृतः ।
मासैक षट्दिनस्तत्र घटिकैका (१८।१।६।१) च राज्यकृत् ॥ ३ ॥

श्रीवीरमखांस्तत्र वर्षैक (१।०।०।०) राज्यकृद् मुदा ।
योगिनीपुरमध्ये च लोदी चत्वारि संज्ञकः ॥ ४ ॥

एकस्मिन् दिवसे तत्र गजनी नाम महापुरी ।
चकत्था वसति(वंशज)स्तत्र नामा तिमिरलिंगकः ॥ ५ ॥

छागछागी च बहवः गृहे तिष्ठति सर्वदा ।
शतवेद(४००)मिता संख्या वर्त्तते च गृहांगणे ॥ ६ ॥

तत्र पुर्यां च सद्वार्ता भवतीह चतुष्पथे ।
'म्लेच्छरूपेण भिक्षुः स मुखे संभाषितं इदं ॥ ७ ॥

अर्द्धसेरप्रमाणेन भ्रंगीनां च जलं शुभं ।
घृतसक्करसंयुक्तं रोटिका यः प्रदापयेत् ॥ ८ ॥

तस्याहं दीयते राज्यं मान षड्वंशकं शुभं ।
ढिल्लीपति करिष्येहं नात्र कार्या विचारणा ॥ ९ ॥

प्रभातसमयाद्भक्ति न दत्तं केनचित् तदा ।
स एव तिमिरोलिंगः वनाद् गृहे समागतः ॥ १० ॥

माता सहश्च कथितं वचनं भिक्षुकस्य च ।
माता आज्ञां च कृत्वान् सामग्री सहितो गतः ॥ ११ ॥

घृतं भिक्षुमुखस्याग्रे भुक्तं च शुभयोगतः ।
तुष्टमान वचं वक्ति दत्तं राज्याद्रिवंशकः ॥ १२ ॥

भिक्षु अदृश्यतां याति चकत्था स गृहागतः ।
छागछागी च विक्रीता अश्वाश्च किंकराः कृताः ॥ १३ ॥

नित्यैक द्विकला तस्य वर्द्धते च दिने दिने ।
सेना च तत्र संजाता चकत्थानां समीपके ॥ १४ ॥

पंचविंशसहस्राणि तथा पंचशतानि च ।
द्विपंचासन्मिता(२५५५२)संख्या आगतो योगिनीपुरे ॥ १५ ॥

संग्रामं च कृतं तत्र संख्या एकोनविंशतिः ।
मृतो वीरमखांस्तत्र जितो तिमिरलिंगकः ॥ १६ ॥

॥ इति लोदीवंशः ॥ ३१७ ॥[1]

॥ नवमः सर्गः ॥

॥ अथ चकत्था ॥

विक्रमसमयात्तत्र त्रिपंचपंचचन्द्रमा (१५५३) ।
वैशाखमासे रम्ये च कृष्णपक्षे त्रयोदशी ॥ १ ॥

दिल्ली नाम महापुर्यां चकत्था राज्यनायकः ।
आदौ राज्यकृतस्तत्र पराक्रमसमन्वितः ॥ २ ॥

आदिः तिमिरलिंगाख्यः वर्ष पंचदशास्तथा ।
मासैक पंचदिवसः घट्यष्टकमिदं नराः(तदा)(१५।१।५।८) ॥ ३ ॥

द्वितीयो वब्बरो नाम पंचविंशतिवत्सरः ।
पंचमास द्विविंशाहा द्वाविंशतिघटी (२५।५।२२।२२) मता ॥ ४ ॥

समर्थसागर सोपि ज्ञानवान् स विचक्षणः ।
महाबली मतीश्रेष्ठो योगिनीपुरमंडले ॥ ५ ॥

हिमाऊ नामतस्तस्य पुत्रो विजयकृद् यशी ।
गोडपर्यंतराज्यश्री दाता(भोक्ता) समरदुर्जयः ॥ ६ ॥

हमाऊ वर्ष चत्वारि मास पंच दिनत्रयं ।
त्रिघटी च मिता संख्या (४।५।३।३) आदौ च राज्यकृद् मुदा ॥७॥

---

१. इति श्रीइंद्रप्रस्थप्रबंधे लोदीवंशराज्यवर्णनो नाम अष्टमः सर्गः (ख) ।

एकदा कर्मयोगेन शेखः पूर्वदिशि स्थितः ।
आगतश्च महापूर्यां बलात् राज्यं गृहीतवान् ॥ ८ ॥
चकत्था संगतास्तत्र बलखनाम पुरे वरे ।
तस्याधिपः स गजनी परिवारश्च रक्षितः ॥ ९ ॥
तत्र जलाल संजातः जन्म च गजनीपुरे ।
राज्यश्च क्रियते शेखः ढिल्लीपुर्यां स उत्तमः ॥ १० ॥

॥ इति चकत्थाः ॥ ३२७ ॥[1]

॥ दशमः सर्गः ॥

॥ अथ शेखाः ॥

षड्वर्षश्च अलीसाहि मासैक दिवसा नव ।
त्रयोदश घटी मानं (६।१।९।१३) प्रथमो शेख राज्यकृत् ॥ १ ॥
सलेमसाहाख्य नृपः सप्तवर्ष दिनाष्टकः ।
मास पंच ग्रहघटी(७।५।८।९)द्वितीयो म्लेच्छ राज्यकृत् ॥ २ ॥
पीरोजसाहि षण्मास त्रिदिनं घटिका नव(०।६।३।९)।
सेरसाहि दशाह्नि च घटी सप्त(०।०।१०।७)प्रमाणकः ॥ ३ ॥
अलीमहम्मद सोपि विधुवर्षैकमासकः ।
त्रयोदश दिनास्तत्र(१।१।१३।०)राज्यकृत् पंचमो नृपः ॥ ४ ॥
बलखस्याधिपस्याग्रे हमाऊ वाक्यमब्रवीत् ।
त्वदाज्ञां च मया ढिल्यां पा(या)स्यंति पृथवीपते ॥ ५ ॥
सहस्राणि द्विचत्वारि(४२०००)सेना दत्ता धराधिपः ।
संग्रामं च कृतं तत्र इन्द्रप्रस्थपुरे बहिः ॥ ६ ॥
अलीमहमदो नाम मृतस्तत्रैव संगरे ।
जितो हमाऊ नृपतिः दिल्लीपुर्यां ततो गतः ॥ ७ ॥

॥ इति शेखवंशराज्यम् ॥ ३३४ ॥[2]

---

१. इति श्रीइंद्रप्रस्थप्रबंधे चकत्ताराज्यप्रथमवर्णनो नाम नवमः सर्गः । (ख)
२. इति श्रीइंद्रप्रस्थप्रबंधे शेषराज्यवर्णनो नाम दशमः सर्गः (ख)

॥ एकादशः सर्गः ॥

॥ पुनः चकत्ताः ॥

वर्षैक मास पंचश्च त्रयोविंशति वासरा (१।५।२३।०) ।
हमाऊ च कृतं राज्यं इन्द्रप्रस्थ पुरे वरे ॥ १ ॥

दूसरज्ञाति - वणिक हेमूनामश्च राज्यकृत् ।
पंच मास दिन सप्त (०।५।७।०) योगिनीपुरमध्यगः ॥ २ ॥

गतो वाक्यश्च गजनी - राज्यकृत् वणिको वरः ।
आगतो च जलालाख्यः अकवर् संज्ञको नृपः ॥ ३ ॥

विक्रमसमयात् त्र्येक षोडश(१६१३)संख्यक वत्सरः ।
मासफाल्गुनकृष्णस्य पक्ष तिथि त्रयोदशी ॥ ४ ॥

राज्यं स्थापितवान् तत्र महाबल पराक्रमी ।
विक्रमाब्धि द्विषट् चैके(१६२४) चित्रकूटपुरे गतः ॥ ५ ॥

जलाल क्ष्मापतिर्भावि अर्कलब्धवरोत्तमः ।
व्यासवाक्यरुचिः श्रेमा(श्रीमान्) दयालुरवनिपलिः ॥ ६ ॥

गोविप्रे न भवेत् पीडा कसा(ला)वपि न पापकृत् ।
गंगायमुनयोः प्रीतिकारी कारुण्यसागरः ॥ ७ ॥

अगम्यागम्यध्वंसी च धनधान्यसमृद्धिवान् ।
जलालस्य शुभे राज्ये दुःखिता न च मेदिनी ॥ ८ ॥

गोपाचल-चित्रकूटे संग्रह क्रियते नरैः ।
स जलालः चित्रकूटे ढिल्याः चैव गतो द्रुतं ॥ ९ ॥

विक्रमात् षट्त्रिषट् चैके(१६३६) चित्रकूटपुरं जितः ।
स्थापितं तत्र राज्यं स्वं ढिल्लीपुरे स आगतः ॥ १० ॥

अकब्बरजलालस्याष्टकचत्वारि वत्सराः ।
नवमासैकदिवस द्विघटी(४८।९।१।२)राज्यकृद् धरा ॥ ११ ॥

द्विर्विंशतिश्च वर्षाणि मासमेक दिनत्रयम् (२२।१।३।०) ।
जहांगीर कृतं राज्यं धरापृष्ठे मनोहरः ॥ १२ ॥

वर्ष द्वात्रिंशतश्चैव मास सप्त ऋतुर्दिना ।
त्रिघटी(३२।७।६।३) च साहिजिहां राज्यं कृतं धरणीतले ॥ १३ ॥

अवरंगसाहि नामाख्यः वर्षाणि नववेद कृत् ।
नवमासश्च भदिन(४९।९।२७।०)राज्यं कृत् योगिनीपुरे ॥१४॥

महामानी बली सूर वाक्यनिर्वाहकारकः ।
अवरंगासाहि नामा च यवनो स कलौ युगे ॥ १५ ॥

विक्रमसमयात् त्रिषट् उपरि सप्तदश स्मृतं (१७३६)।
मासि फाल्गुनामावास्यां गतो च परलोक सः ॥ १६ ॥

सप्तवंशभवा सिद्धि यद्दत्तं भिक्षुरुपिणा ।
चकत्ता स कृतस्तत्र राज्यं च योगिनीपुरे ॥ १७ ॥

अष्टम आलमाख्यश्च भविता जगतीतले ।
न गतो इन्द्रप्रस्थं च न भवेत् राज्यनायकः ॥ १८ ॥

दक्षिणादागता म्लेच्छाः संग्रामं च कृतं बहुः ।
स म्लेच्छं जितवान् पूर्वः पश्चात् दक्षिणदिग्गतः ॥ १९ ॥

आगतो मध्यदेशे च स देश उध्द्वसीकृतः ।
उपद्रवयुता तत्र सर्वत्राभूद् वसुन्धरा ॥ २० ॥

क्रोश विंशतिप्रमाणेन ग्राम एको न दृश्यते ।
.... ॥ २१ ॥

अग्निप्रज्वालितं ग्रामं स्थाने स्थानेषु मंडले ।
गतेन चलितो मार्गं दुर्भिक्षे बहवो मृताः ॥ २२ ॥

क्वचित् तृषामृता लोका क्षुधया चैव पीडिताः ।
नरनारी गवाश्वाद्या स्थाने स्थाने क्षयं गताः ॥ २३ ॥

बहादर इति नाम विख्याताः भविता भुवि ।
यास्यति दक्षिणे देशे तत्र स्थानेर्द्धमार्गणे ॥ २४ ॥

सर्वे नृपा च बहवः आगताः स्वगृहे सकृत् ।
स्वस्वपुरं च भ्रातृस्व सर्वं एकत्र जायते ॥ २५ ॥

बहादराख्ययवनः कुटुम्बसहितस्तदा ।
मृतो दक्षिणमध्ये न ईदृशी भवितव्यता ॥ २६ ॥

बहादरस्य च वर्ष मासैक दिन सप्तकं ।
कृतं च स्वल्पराज्यं च अष्टम नृपनामभाक् ॥ २७ ॥[1]

सप्तमास दिनं सप्त नष्ट राज्यं भविष्यति ।
न कोऽपि इन्द्रप्रस्थे च यवनो राज्यनायकः ॥ २८ ॥[2]

व्यासवाक्यप्रमाणेन मांडवे दक्षिणे मृताः ।
यवना दुर्मदा दुष्टाः पापिष्ठाश्च क्षयं गताः ॥ २९ ॥[3]

पश्चात् उत्पद्यते चैव अंतरिक्षत(?न)रो वरः ।
भोक्ष्यते ह्येकछत्रेण षट्वर्षाणि दिनत्रयम् ॥ ३० ॥

बहादर पंच वर्ष द्विमास दिन सप्तकम् ।
कृतं पुरी विना राज्यं योगिनीपुर नामतः ॥ ३१ ॥[4]

पश्चात् साहिजिहांदार वर्षैक मास इंदुभाक् ।
त्रिदिनं राज्यसंख्या च भवतीह न संसय ॥ ३२ ॥[5]

॥ इति चकत्ता-वंशः ॥ ३६६ ॥

१. ख का श्लोक ६४ । २. ख का श्लोक ६५ । ३. ख का श्लोक ६६ ।
४. ख का श्लोक [illegible] । ५. ख का श्लोक [illegible] ।

परिशिष्ट

क प्रति के श्लोक के बाद ख प्रति में ये श्लोक और हैं :—

नवरंगसाहिसमयात् युद्धसंख्या च कथ्यते ।
भविष्यति युद्धमध्ये वंश चत्वारि तत्र च ॥ २७ ॥

अथातः विक्रमनृपात् त्रिषट्सप्तचंद्रमा (१७६३) ।
फाल्गुनकृष्णपक्षात् सयुद्धसंख्या महीतले ॥ २८ ॥

प्रथमः दक्खिणदेशे भविता यवनाधिपः ।
द्वितीयः पूर्वमध्ये च पुरे च धवले शुभः ॥ २९ ॥

रेवे(बै) राडदेशे तृतीयः मुथरायां समीपके ।
देवकन्यापुरीपार्श्वे पंचमः स प्रकीर्तितः ॥ ३० ॥

संभरावतीमध्ये च षट्संख्यः समरः स्मृतः ।
कामावतीपुरीपार्श्वे सप्तमश्च उदाहृतः ॥ ३१ ॥

अष्टमो संभरिसरे पुनः कामावती पुरी ।
इंद्रप्रस्थात् योजन षट् युद्ध पच्छिम जायते ॥ ३२ ॥

ततो द्वियोजने तत्र पुनः संग्राम कृत् भुवि ।
दक्खिणे चैव संग्रामस्तत्र च महतो भवेत् ॥ ३३ ॥

कुरुक्षेत्रे महच्चैव इंद्रप्रस्थपुरीमपि ।
अर्गलाख्य पुरे तत्र भविता युद्धसंमतः ॥ ३४ ॥

भवेत्स मरुधरे खंडे संग्रामत्रयसद्बलात् ।
वैराटपुरतः त्रयस्थयोजनश्च तदा भवेत् ॥ ३५ ॥

कुशवंशभवाः राजाः बुद्धिभ्रष्टात् न जीतयेत् ।
पुनः दक्खिणयोर्मध्ये पुनः कामावती चु(पु)री ॥ ३६ ॥

पुनः अम्बावतीपुर्यां युद्धद्वय भविष्यति ।
मेदपाटे महद्देशे युद्ध चत्वारि जायते ॥ ३७ ॥

श्री मल्लाभपुरे रम्य अतीवयुद्धकृद् द्वयं ॥ ३८ ॥[1]

---

1. एक पंक्ति नहीं है ।

पुनः संभरितो युग्मयोजनं उत्तरादिभिः ।
संग्रामद्वयसद्धोर्यौ भविता तत्र भूपतिः ॥ ३९ ॥

पुनः अम्बावतीपुर्याः योजनाष्टक कूणगः ।
दशयोजनपूर्वश्च युद्धद्वय भविष्यति ॥ ४० ॥

भवितात्र संग्राममतीव गुप्तसंज्ञकः ।
पुनः पूर्वदिशिस्तष्ट (तस्य) युद्ध चत्वारि जायते ॥ ४१ ॥

द्वियुद्धं दक्खिणे कूणे त्रियुद्धं पछिमादिभिः
एवं युद्ध द्विचत्वारि वर्षे साद्धांष्टके भवेत् ॥ ४२ ॥

अतीव सप्त युद्धं च जायते तत्र सस्वरा ।
धवलपुरे च संभरे च कुरुक्षेत्रे च दक्खणे ॥ ४३ ॥

मेदपाटे मध्यदेशे पुनः उग्रपुरे शुभे ।
एते सप्त महद् युद्धं भविता यवनाधिपात् ॥ ४४ ॥

किंचिन्न्यूनश्च जायते संख्याश्चैव चतुर्दशः ।
एकोनविंशाधमद्वयश्च पुनः कृद् महत् ॥ ४५ ॥

संवत् संख्या विक्रमाच पंचषट् सप्तचन्द्रमा (१७६५) ।
यावत् स राजा बलवान् कुशवंशभवा नृपाः ॥ ४६ ॥

पश्चाद् युद्धद्वये तत्र निर्बला जायते तदा ।
चहूवाणै सुखसंपत्तिः भविष्यति न संशयः ॥ ४७ ॥

चहूवाण बलतोत्र कुशवंशसुखं भवेत् ।
यवनः पुनः संग्राममारितं प्रबलं तदा ॥ ४८ ॥

कुशवंशः पुनस्तत्र जितवान् जगतीतले ।
राष्ट्रवंशश्च सद्भूपः कुशवंशनृपोत्तमः ॥ ४९ ॥

मेदपाटपतिस्तत्र नृपाणामाज्ञया जगत् ।
प्रवर्तते महीपाल वर्ष चैक प्रमाणकः ॥ ५० ॥

पश्चाद्दिल्लीपतिस्तत्र मेदपाटपतिर्भवेत् ।
क्रमेण राष्ट्रवंशश्च कुशवंशोद्भवा नृपाः ॥ ५१ ॥

चालुक्यः चहूवाणश्च भविता सद्बली नृपः ।
चहूवाणः संभरिपुर्यां नृपतिस्तत्र जायते ॥ ५२ ॥

चहूवाण संभराधीशः भविष्यति महीपतिः ।
चित्रकूटपुरमपि वसिष्यति महच्छुभम् ।। ५३ ।।
सोसोद्या नृप धर्मज्ञः पुरे च वसति सदा ।
पुनः यादवभूपाला पमारा नृपधार्मिकाः ।। ५४ ।।
धरापृष्ठे भविष्यंति राज्ये धर्मिष्ठवान् भवेत् ।
खीचीगोड़महीपाल राज्यं स्वस्व करिष्यति ।। ५५ ।।
शृणु राजनिमित्तं च दिल्लीपुर्यां भविष्यति ।
नवरंगसाहिवंशश्च क्रमेण क्षय यास्यति ।। ५६ ।।
वर्ष षोडशमध्ये च चाष्टवंश भविष्यति ।
एवं भूत्वा च संग्रामं स्थाने स्थाने भविष्यति ।। ५७ ।।
सप्तवंशभवा सिद्धिः यद्दत्तं भिक्षुरूपिणा ।
तत्सिद्धि पूर्णतां याति पश्चाद् द्वे च भविष्यति ।।५८।।
बहादुरः पंचवर्ष...[1]... ... ... ।। ५९ ।।
पश्चात् साहिजिहांदारः...[2]... ... ... ।। ६० ।।
मध्ये त्रिमासो अवर एक राज्यं पुनर्भवेत् ।
पश्चात् षट्वर्ष माससप्त राज्यं फरकसेनक ।। ६१ ।।
द्विमासमध्ये द्विनृपः द्विवर्षे च त्रयो नृपाः ।
एवं संपूर्णतां याति दिल्लीपुर्यामधीश्वराः ।। ६२ ।।
पंचमास दिन सप्त नृष्ट राज्यं भविष्यति ।
पश्चात् द्विवंश उत्पत्तिः अंतरिक्षतरोर्वरः ।। ६३ ।।
राज्यं कृत्वा च दिक्संख्या वर्ष दिल्लीधराधिपः ।
पश्चात् उत्पद्यते राजन् राजा धर्मेण तत्परः ।। ६४ ।।[4]
शतनवमिता संख्या पुनः सप्तश्च संयुता ।
अधिमासयुता मध्ये शाकविक्रमकालतः ।। ६५ ।।[5]
तुंवरः स्थापितः सोपि अधिमासयुता अपि ।
योजनीया तदा संवत् म्लेच्छतो राज्य यास्यति ।।

।। इति श्रीइंद्रप्रस्थप्रबंध चिकत्ताराज्यवर्णनो नाम एकादशः सर्गः ।।

---

१. देखें प्रबन्ध का ३२ वां श्लोक । २. देखें प्रबन्ध का ३३ वां श्लोक । ३. देखें प्रबन्ध का ३० वां श्लोक । ४. बदल कर संख्या ६७ की गई है और बीच में प्रबन्ध के श्लोक २७–३० ऊपर की तरफ दिये गये हैं । उनकी संख्या ६४, ६६ है । बदल कर संख्या ६८ की गई है ।

परिशिष्ट २

[मूल ग्रन्थ के मुद्रण के अनन्तर श्री अगरचन्दजी नाहटा, बीकानेर ने यह सामग्री भेजी है जो सधन्यवाद परिशिष्ट के रूप में यहाँ दी जा रही है। प्र.सं.]

अथ ढीली स्थान की राजावली लिक्ष(ख्य)ते

तोमरवंशे संवत् ८३६ आदि राणा जाजू १ वाजू २ राजू ३ सीहा ४ जवालु ५ ओढरू ६ जेहरू ७ वच्छहर ८ पोपलु ९ रावलुपिहणपालु १० रावलु तोल्हणपालु ११ रावलु गोपाल[1] १२ रावलु सलक्षणु[2] १३ रावलु जयपालु[3] १४ रावलु कम्बरू(कुंवर)पालु[4] १५ रावलु अनंगपालु[5] १६ रावलु तेजपाल[6] १७ रावलु मदनपालु १८ रावलु कृतपालु १९ रावलु लखणपालु २० राणा पृथ्वीपालु[7] २१ एती राजावली ॥ छ॥

ततः संवत् १२१९ वर्षे तोमर राजानुपसर्ते चोहाण वंसि रावलु वीसल राजु लियो[8] १ अमरगंगेय[9] २ पीथड[10] (पृथ्वीराज द्वितीय) ३ सोमेसरू[11] रावलु

---

१. कनिंघम साहिब की आर्कियोलाजिकलसर्वे आफ इण्डिया नामक पुस्तक की जिल्द प्रथम, पृष्ठ २४९ में ११-१२ वें नम्बर पर 'गोपाल' नाम पाया जाता है।

२. उक्त पुस्तक में १३ वें नंबर पर 'सल्लक्षपाल' दिया है।

३. उक्त पुस्तक में १४ वें नं. पर 'जयपाल' नाम दिया है।

४. उक्त पुस्तक में १५ वें नं. पर 'कुंवरपाल' नाम दिया है। यह नाम गुटके में कुछ अशुद्ध रूप में लिखा गया है।

५. उक्त पुस्तक में १६ वें नं. पर अनंगपाल का नाम दिया है और इसका राज्यकाल १९ वर्ष ६ महीना और १८ दिन बतलाया है। गुटके में भी यह नाम १६ वें नंबर पर है।

६. यह नाम ग्वालियर की ख्यात में पाया जाता है।

७. २० वें नंबर पर 'पृथ्वीराज' नाम दिया है और उसका राज्यकाल २२ वर्ष २ महीने १६ दिन बतलाया है।—देखो, ना. प्र. पत्रिका भाग १, पृ. ४०५।

८. श्रीमान ओझाजी ने तोमर वंशियों से चोहानों द्वारा दिल्ली लेने का समय वि. सं. १२०७ के लगभग बतलाया है।

९. यह अर्णोराज का पुत्र और जगदेव का छोटा भाई था। वीर तथा पराक्रमी था और अपने ज्येष्ठ भ्राता से राज्य छीन कर उसका अधिकारी बना था। — देखो, भारत के प्रा. राज., भा. १, पृ. २४५।

१०. यह विग्रहराज (वीसलदेव चतुर्थ) का पुत्र था और अपने पिता के बाद राज्य का उत्तराधिकारी था। प्रबन्धकोष के अंत की वंशावली में इस वीसलदेव के बाद अमरगंगेय का अधिकारी होना लिखा है।

११. प्रबन्धकोश की वंशावली में अमरगंगेय के बाद पेथड़देव का अधिकारी होना लिखा है। यह जगदेव का पुत्र और वीसलदेव का भतीजा था। इसने अमरगंगेय से राज्य छीना था और यह पृथ्वीराज द्वितीय कहलाता है।

पीथरू[1] (पृथ्वीराज तृतीय) का रावलु बाहलु नागद्यो (नागदेव) ७ रावलु पृथ्वीराज[2] ८ इतने चौहाण हुए।

संवत् १२४६ वर्षे चत्र वदि २ तेजपाल ढीली लई, पृथ्वीराज कौ सेवकु वखीसलपाल कौ पुत्रु दिवाकर बांध लियौ।[3]

संवत् १२४६ चैत्र सुदि २ सुलितान सहाबुद्दीन (शहाबुद्दीन तुर्कवंश) गजनी तहिं आयो। १४ वरसि (वर्ष) राजु कियो[4]।

संवत् १२६३ वर्षे सुलितानु कुतुबद्दीन एबक[5] गुलाम वंश राजु वर्ष ३। संवत् १२६६ वर्षें सुलितानु समसुदन[6] (शमसुद्दीन अल्तमश) वर्ष २६ राजज्यं कृत।

संवत् १२६२ वर्षे राजा पेरोशाहि (फिरोजशाह) राज्यं कृतं[7] मास ६ वर्ष ३। संवत् १२६७ सुलितानु मोजुदीन (मुइजुद्दीन बहरामशाह) वर्ष ३ राज्यं कृतं[8]।

---

१. यह अर्णोराज का तृतीय पुत्र था और पृथ्वीराज द्वितीय का चाचा था। पृथ्वीराज द्वितीय के बाद उसके मंत्रियों द्वारा राज्य का उत्तराधिकारी घोषित किया गया था।

२. इन तीन राजाओं का अन्यत्र कोई उल्लेख नहीं मिलता।

३. संवत् १२४६ में किस तेजपाल ने दिल्ली ली और दिवाकर ने उसे कब बांधा, यह कुछ मालूम नहीं हो सका।

४. महा म. गौरीशंकर हीराचंदजी ओझा कृत राजपूताने का इतिहास प्रथम जिल्द के परिशिष्ट नं. ६ में दिल्ली के सुलतानों की वंशावली में शहाबुद्दीन गोरी का राज्यकाल वि० सं० १२४६ से १२६२ तक १४ वर्ष बतलाया है। अतः दोनों का समय परस्पर मिल जाता है। आगे के नोट इसी वंशावली के आधार से दिए गए हैं।

५. ओझाजी की उक्त वंशावली में कुतुबुद्दीन ऐबक के बाद वि० सं० १२६३ से १२६७ तक आरामशाह के राज्य करने का उल्लेख किया गया है। यह उल्लेख गुटके की राजावली में नहीं है।

६. वंशावली में वि० सं० १२४७ से १२६३ तक शमसुद्दीन अल्तमश के राज्य का उल्लेख किया गया है।

७. उपर्युक्त वंशावली में रुक्नुद्दीन फीरोजशाह का वि० सं० १२६३ वें में राज्य करना बतलाया है और उसी सं० १२६३ में रजिया बेगम के राज्य करने का उल्लेख किया गया है। परन्तु गुटके में पेरोज या फीरोजशाह का ही ३ वर्ष ६ महीना राज्य करना लिखा है, जो चिन्तनीय है।

८. वंशावली में मुइजुद्दीन बहरामशाह का राज्यकाल वि० सं० १२६७ से १२६६ तक दो वर्ष बतलाया है, परन्तु गुटके की राजावली में ३ वर्ष लिखा है।

संवत् १६६६ वर्षे सुलितानु ऊलावदी (अलाउद्दीन मसूदशाह) राज्यं कृतं[1] धरस (वर्ष) २।

संवत् १३०१ सुलितानु नसीरदी (नासिरूद्दीन महमूदशाह) वर्षे २१ राज्यं कृतं[2]। सं० १३२३ चैत्र वदि २ सोम दिने सुलितानु ग्यासदी बलिवड (ग्यासद्दीन बलवन) वर्ष २ राज्यं कृत[3]। सं० १३४३ वर्षे फाल्गुन वदी ६ शुक्रदिने सुलितानु मोजदी (मुइजुदीन कैकवाद) वर्ष ३ राज्यं कृतं[4]।

सं० १३४६ वर्षे फाल्गुण सुदी ६ शुक्रदिने सुलितानु समसदी (शमसूद्दीन) वर्ष २ राज्यं कृतं[5]। सं० १३४८ वर्षे ज्येष्ट सुदी ५ सोमदिने सुलितानु जलालदी (जलालुद्दीन खिलजी वंश) वर्ष ६ मास ३ राज्यं कृतं[6]। सं० १३५६ वर्षे कार्तिक सुदी ११ भौम दिने सुलितानु रूकनुदी (रूक्नुद्दीन) मास तीन राज्यं कृतं[7]।

सं० १३५४ वर्षे पौष सुदी ८ भौम दिने सुलितानु अलावदी (अलाउद्दीन मुहम्मदशाह) वर्ष १६ मास ३ दिन १५ राज्यं कृतं[8]। सं० १३७३ वर्षे माघ सुदी ६ भौम दिने सुलितानु पुत्र ल्हौवी राणी छीतमदे को पुत्र सहावदी (शाहाबुद्दीन उमरशाह) मास ३ राज्यं कृतं[9]।

---

१. इसका राज्य वि० सं० १२६६ से १३०३ तक ४ वर्ष रहा है।— देखो राजपूताने का इतिहास, भाग, १ परि. नं. ६।

२. ओझाजी की उक्त वंशावली में इसका नाम नासिरूद्दीन मुहम्मदशाह दिया है और राज्यकाल वि० सं० १३०३ से १३२२ तक १६ वर्ष बतलाया है।

३. उक्त वंशावली में इसका नाम गयासुद्दीन बलवन है और राज्यकाल वि० सं० १३२२ से १३४४ तक २२ वर्ष बतलाया है।

४. उक्त वंशावली में इसका नाम मुइजुद्दीन कैकवाद है और राज्य-समय वि० सं० १३४६ तक दिया हुआ है।

५. इसका नाम उक्त वंशावली में नहीं है।

६. इसका वंश 'खिलजी' है और नाम जलालुद्दीन फीरोजशाह पाया जाता है। इसने वि० सं० १३४६ से १३५३ तक राज्य किया था।

७. रूक्नुद्दीन का दूसरा नाम इब्राहिमशाह है और राज्यकाल उक्त वंशावली में वि० सं० १३५३ में दिया है, जिससे भी मालूम होता है कि इसने कुछ महीनों ही राज्य किया था।

८. उक्त वंशावली के अनुसार इसका नाम अलाउद्दीन मुहम्मदशाह था। इसने वि० सं० १३५३ से १३६२ तक १६ वर्ष राज्य किया है। गुटके में १६ वर्ष से ३॥ मास अधिक बतलाया है।

९. उक्त वंशावली में इसका वंश 'खिलजी' है और नाम शहाबुद्दीन उमरशाह दिया हुआ है।

संवत् १३७३ वर्षे फाल्गुन वदी (श)नि दिने सुलितानु ष(खु)सरोखानु राज्यं कृतं[1] नाम नसीरदी वर्षं ४। सं० १३७७ वर्षे अश्वनि सुदी ३ सु(शु)क्र दिने सुलितानु ग्यासदी वर्ष ४ राज्यं कृतं[2]। तुगलकु अंतरं मास ८ राज्यं कृतं।

संमत् १३८२ वर्षे ज्येष्ट सुदी ३ गुरौ दिनें सुलितानु महमद वर्ष २७ राज्यं कृतं[3]। सं० १४०९ वर्षे श्रावण सुदी ८ शनि दिने मुहरम तेरीक २१ कातिक वदी ४ सु(शु)क्र दिने सुलितानू पेरोसाहि राज्यं कृतं[4]। वर्ष ३७ मास ३ दिन ११ राज्यं कृतं। संवत् १४४६ काति वदी ४ शुक्र दिने सुलितानु तुगलसाहि राज्यं कृतं[5]। मास ५। सं० १४४६ वर्षे चैत्र सुदी ८ सुलितानु अबूकसाही महमूदशाही राज्यं कृतं[6]। सं० १४४७ वर्षे अश्वन सुदी ११ वर्ष १ मास ७ दिन ७ राज्यं कृतं[7]। ततः मल्लू राज्यं कृतं। पश्चात दौलतिषां (खां)[8] राज्यं

---

१. इसका शुद्ध नाम नासिरूद्दीन खुशरोशाह था। राजपूताने के इतिहास वाली वंशावली में इससे पहले कुतुबुद्दीन मुबारिकशाह का नाम और दिया हुआ है और उसका राज्यकाल वि० सं० १३७२ से १३७७ तक बतलाया है। गुटकों की राजावली में यह नाम नहीं है। किन्तु नासिरूद्दीनशाह का राज्यकाल ४ वर्ष बतलाया है। जबकि वंशावली में वि० सं० १३७७ में ही कुछ समय रहा है, क्योंकि सं० १३७७ में तुगलक वंश का राज्य हो गया था।

२. उक्त वंशावली में इसका नाम गयासुद्दीन तुगलक और राज्यकाल वि० सं० १३७७ से १३८१ तक लिखा है।

३. इसे मुहम्मद तुगलक कहते हैं और इसका राज्यसमय उक्त वंशावली में वि० सं० १३८१ से १४०८ तक २७ वर्ष पाया जाता है जो गुटके के उक्त समय से मिल जाता है।

४. इसे फिरोजशाह कहते हैं। वंशावली में इसका वि० सं० १४०८ से १४४५ तक ३७ वर्ष राज्यकाल पाया जाता है। गुटके में उल्लिखित समय भी मिल जाता है और यह प्रामाणिक मालूम होता है।

५. उक्त वंशावली के अनुसार यह तुगलक शाह द्वितीय है। इसका राज्यकाल वि० सं० १४४५ में ही कुछ समय तक रहना बतलाया है।

६. उक्त वंशावली में अबूशाह मुहम्मदशाह नाम दिये हैं, जो गुटके के नामों से मिल जाते हैं।

७. वंशावली में सिकन्दरशाह, महमूदशाह, नसरतशाह, महमूदशाह (द्वितीय) के नाम और पाये जाते हैं। और इन सब का राज्यकाल वि० सं० १४४६ से १४५६ तक ११ वर्ष दिया है। गुटके में यह नाम नहीं हैं इससे मालूम होता है कि उसमें कोई भूल अथवा त्रुटि जरूर हुई है।

८. उक्त वंशावली में दोलतखां लोदी का राज्यकाल वि० सं० १४६९ से १४७१ तक दिया है।

कृतं। संवत् १४७२ खदिरखान राज्यं कृतं[1] वर्ष ७। संवत् १४७६ वर्षे वैशाख मुमारखखान राज्यं कृतं[2] वर्ष ११।

संवत् १४९० वर्षे फाल्गुण सुदी ११ शुक्र दिने महमूदसाहि जखकसु (?) वर्ष १२ राज्यं कृतं[3]। संवत् १५०२ वर्षे अलावदी मास ३[4]। अमानतखां वर्ष ६ राज्यं कृतं। संवत् १५०८ वर्षे वैशाख सुदी ३ सुलितानु बहलोलसाहि[5] पठाणु लोदी राज्यं कृतं वर्ष ३८ मास २ दिन ८ राज्यं कृतं। संवत् १५४६ वर्षें मार्गसिर मासे सुलितानु बराहिमु[6] राज्यं कृतं वर्ष ८ मास ५ राज्यं कृतं। संवत् १५८२ वर्षें वैशाख सुदो ८ पातिशाहि बब्बरू[7] मुगल काबुल तहिं आया राज्यं करोति इदानीं ।। छ।। राज्यं कृतं वर्षे ६ दिन।

संवत् १५८८ वर्षे पोह वदि······हुमाऊं पातिसाहि[8] राज्यं करोति वर्ष ८ मास······राज्यं क्रियते। संवत् १५९७ वर्षे ज्येष्ट मध्ये हसनसूर का पुत्र साहि आलमु[9] राज्यं करोति। संवत् १५९९ सलेमसाहि राज्यं कृतं[10] वर्ष ६

---

१. इसका नाम खिजरखां और वंश सैयद था, और राज्यसमय ७ वर्ष सं० १४७१ से १४७८ तक रहा है, ऐसा उक्त वंशावली से जाना जाता है।

२. यह मुइजुद्दीन मुबारकशाह कहलाता था। उक्त वंशावली में इसका राज्यसमय वि० सं० १४७८ से १४९० तक पाया जाता है।

३. इसे मोहम्मदशाह कहते थे, उक्त वंशावली में इसका राज्य १० वर्ष वि० सं० १४९० से १५०० तक दिया है।

४. यह आलमशाह कहलाता था उक्त वंशावली में इसका वि० सं० १५०० से १५०८ तक आठ वर्ष बतलाया है जब कि गुटके में ३ मास, पश्चात् अमानतखां का राज्य ६ वर्ष करना लिखा है। ओझाजी की वंशावली में इसका कोई उल्लेख नहीं है।

५–६. इन दोनों का राज्यकाल उक्त वंशावली में मिल जाता है।

७. इसका नाम इब्राहीम लोदी था, और उक्त वंशावली में राज्यकाल वि० सं० १५७४ से १५८३ तक दिया है।

८. उक्त वंशावली में इसका राज्यकाल वि० सं० १५८३ से १५८७ तक ४ वर्ष दिया है।

९. इसका नाम हुमायूं था और वंश 'सूर' कहलाता था। उक्त वंशावली के अनुसार इसका राज्य वि० सं० १५८७ से १५९६ तक रहा।

१०. वंशावली में हुमायूं के बाद इसलाशाह का राज्य वि० सं० १६०२ से १६०९ तक करना लिखा है।

सं० १६०८ वर्षे पेरोसाहि राज्यं कृतं[1] दिन १०। सं० १६०८ ग्रदनी[2] राज्यं कृतं वर्ष ४। संवत् १६९२ आसोज वदि २ हुमाउं[3] राव सेत राज्य हिंदू (?) संवत् १६१२ फागुण वदि २ अकबर[4] राज्यं करोति। सं० १६६२ काति सुदि १४ अकबर कौ पुत्र साह सलेम[5] राज्यं करोति। सं० १६८५ साह सलेम कौ पुत्रु शेरशाह[6] सुलतान राज्यं करोति।

---

१. वंशावली में मुहम्मद आदिलशाह नाम दिया है और राज्य अमल वि० सं० १६०९ से १६१० तक बतलाया है।

२–३. ये दोनों नाम वंशावली में नहीं पाये जाते किन्तु उसमें इब्राहीम सूर और सिकंदरशाह सूर के नाम दिये हैं। हुमायूं दूसरी बार गद्दी पर बैठा था। इसका वंश मुगल कहा जाता है।

४. यह अकबरशाह कहलाता था, बड़ा राजनीतिज्ञ और योग्य शासक था।

५. इसे जहांगीर कहते हैं।

६. यह शाहजहां के नाम से मशहूर था। वंशावली के अनुसार इसका राज्य वि० सं० १६८५ से १७१५ तक रहा है।

परिशिष्ट ३

नामानुक्रमणिका

क्रमांक

क्रमांक